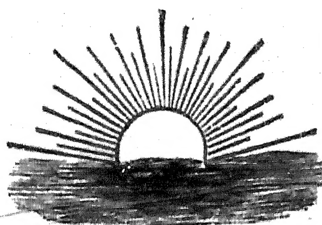


समय का फेर

"चन्द्र आजमी"

बसन्त पञ्चमी
सम्बत् २०१४ वि०

बसन्त अंक—

चन्द्र आजमी

की

सर्वश्रेष्ठ उपन्यास

समय का फेर

लेखक—

फूलचन्द्र "चन्द्र आजमी"

गोरखपुर

प्रथम संस्करण 1000 } सम्बत् २०१४ विक्रमी { मूल्य १ रु० ५० न.पै.

प्रकाशक
ठाकुर महातम राव
पुस्तक विक्रेता, गोरखपुर।

मूल्यः—
एक रुपया, पचास नया पैसा

पुस्तक मिलने का पताः-
फूलचन्द "चन्द्र आजमी"
"चन्द्र सेवा साहित्य प्रसार मन्दिर"
"द्रोपदी भवन" निकट बड़ा डाकखाना
मकान नं० ३३१ मायाबाजार, गोरखपुर।

मुद्रक—
श्रीमद्भागवत प्रेस,
मायाबाजार, गोरखपुर।

समर्पण

पू

ज

नी

या

करुणामयी श्रीमती माता जी

के

चरणों में

—चन्द्रआजमी

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्रीयुत् चन्द्र जी 'आजमी' से हिन्दी संसार अभी परिचित नहीं है। वास्तव में आप उर्दू के विद्वान हैं किन्तु राष्ट्रीयता की लहर से प्रभावित हो कर आप ने राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखने का संकल्प किया और फलस्वरूप आप का यह प्रथम प्रयास जनता के सम्मुख उपस्थित है।

पुस्तक के गुण दोषों का वर्णन करना इस स्थान पर उपयुक्त न होगा विज्ञ पाठक गण इसका निर्णय स्वयं कर लेंगे कि लेखक अपने प्रयत्न में कहां तक सफल हुआ है। कहानी का विषय अत्यन्त सरल तथा जिटलताओं से मुक्त है। यह सत्य है कि साहित्य दिग्गजों के दृष्टिकोण से यह उपन्यास बहुत ऊँचा स्थान नहीं पा सकता किन्तु आज कल हमें ऐसे मनोवैज्ञानिक और उच्च कोटि के साहित्यिक उपन्यास की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि जनसाधारण की रुचि और आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली गल्पों की, जिन्हें वे समझ कर अपना सकें और जिनसे शिक्षा ग्रहण कर के अपने जीवन को वे उन्नति शील और आनन्दमय बना सकें। मेरी ऐसी धारणा है कि यह पुस्तक इस आवश्यकता की पूर्ति अवश्य करेगी।

कृष्णप्यारे लाल

जिला विद्यालय निरीक्षक,
शिक्षा विभाग, उत्तरप्रदेश

आगरा
२७ अप्रैल १९४८

दो शब्द

भारत के स्वतन्त्र होने के उपक्रम में लोकशिक्षण की जो धाराएँ प्रवाहित की गई हैं उनमें प्रचुर मात्रा में जनसमुदाय के मनोरञ्जन और आदर्श प्रेम को विकसित करने वाले साहित्य की सृष्टि आवश्यक है। जहां पर देश के विभिन्न विधानों के विशेषज्ञ लोग विशिष्ट ज्ञान विज्ञान के ग्रन्थों को प्रणाम करके भारतीय वाङ्मय की श्रीवृद्धि करने में लगे हैं वही लोक साहित्य की प्रचुर मात्रा में रचना करके जनता को सामान्य ज्ञान के साथ साथ पारिवारिक और सामाजिक उत्थान की संसृष्टि की ओर अग्रसर करना भी साहित्य सेवा का उद्देश्य है। हमें हर्ष है कि जनता के बीच में रह कर और लोक जागृति के संघर्ष के विविध तत्वों में तात्विक गवेषणा और अनुशीलन में कई दशाब्द बिताने के अनुभवों को उपन्यास के रूप में उपस्थित करके श्री फूलचन्द्र जी आजमी ने लोक साहित्य के एक आवश्यक अंग की पूर्ति में अपना हाथ बंटाया है।

प्रस्तुत उपन्यास लोक शिक्षण की दृष्टि से सभी लोगों के हाथ में पड़ने योग्य है। भाषा सरल और सुबोध है जिसमें इस चेष्टा का समावेश पूर्ण रूप से किया गया है कि पुस्तक का कोई भी स्थल दुरूह न होने पावे। इसी लिये प्रचलित उर्दू शब्दों को भी ग्रहण करके लेखक ने अपनी उदार वृत्ति एवं राष्ट्रभाषा के व्यापक स्वरूप को अपनाया है। यह पुस्तक घर-घर में पहुँचे और विद्वानों को मनोरञ्जन तथा साधारण लोगों को मनोरञ्जन के साथ आदर्शों की ओर बढ़ने और समाज सुधार की प्रवृत्तियों में लगने का दृष्टिकोण प्रदान करे इस उद्देश्य को प्राप्त करने में "समय का फेर" नामक यह उपन्यास विशेष सफल हुआ है।

हमें विश्वास है कि श्री आजमी इसी प्रकार साहित्य और समाज की सेवा करते रहेंगे।

शेषमणि त्रिपाठी

साहित्यरत्न एम.ए.बी.टी.
विद्याभूषण
भूतपूर्व प्रधानाचार्य राजकीय दीक्षण विद्यालय
तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं
भूतपूर्व डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल
(रिटायर्ड)

शिवरात्रि
२०१४

आज कल सस्ता साहित्य प्रचुर मात्रा में बढ़ रहा है क्योंकि उसकी आवश्यकता है। साधारण हिन्दी जानने वाला यात्रा के समय अथवा खाली समय में या केवल मनोरञ्जन के लिये बड़े बड़े लेखकों की कृतियां पढ़ना पसन्द नहीं करता। उसे तो चाहिये एक सुखद कथानक जो कम से कम समय में उसे किसी निर्दिष्ट लक्ष्य पर पहुँचा दे जिसके बाद वह कल्पना के सागर में डूबता उतराता रहे। भाषा के सुविधा के लिये श्री "चन्द्र आजमी" ने ऐसे ही उद्देश्य से प्रेरित होकर "समय का फेर" नामक पुस्तक की रचना की है।

उर्दू के कवि तथा लेखक होते हुए भी आप ने हिन्दी के माध्यम द्वारा अपनी अनुभूतियों को प्रदर्शित करने की जो चेष्टा की है वह श्लाघनीय है। आप की शैली में उनके निष्कपट स्वभाव तथा भोलेपन की स्पष्ट छाप है। आप ने सत्य को सत्य का रूप देने में कोई खींच तान करने की चेष्टा नहीं की है। जैसा आप सोचते हैं वैसा ही लिख देने में आप को तनिक भी संकोच नहीं है।

"समय का फेर" सामाजिक जीवन पर एक मीठी चुटकी है और भारतीय संस्कृति की महानता बतलाना इसका गूढ़ उद्देश्य है। भाषा भी उद्देश्य के अनुकूल ही सरल और सुबोध लिखी गई है, आशा है वह सभी लोग जिनके लिये यह पुस्तक लिखी गई है "समय का फेर" का आदर करेंगे।

कैलाश नाथ श्रीवास्तव
प्रधानाचार्य
राजकीय जूनियर ट्रेनिङ्ग कालेज
गोरखपुर।

बसंत पञ्चमी, २०१४

आत्म-निवेदन

प्रस्तुत उपन्यास "समय का फेर" पाठकों के समक्ष देर से प्रस्तुत हो रहा है, यद्यपि इसकी रचना सन् १९३९ के लगभग हो चुकी थी। किन्तु कुछ बाधाओं के फलस्वरूप यह प्रकाशित न हो सका। सन् १९४२ भारत के लिये एक संक्रान्ति-काल था राजनैतिक उथल पुथल हो रहे थे। द्वितीय महायुद्ध का प्रचण्ड चक्र चल रहा था। ब्रिटिश सरकार भी भारतीय जनता को अपने दमन चक्र में पीस डालना चाहती थी। ऐसे समय में लेखक और प्रकाशक दोनों सशंकित थे। कागजों का अभाव था। इससे पुस्तक का प्रकाशन टल गया।

"साहित्य समाज का दर्पण है" इसी सत्य का चित्रण करने की पूर्ण चेष्टा प्रस्तुत उपन्यास में की गयी है किन्तु यथार्थ के लिये आदर्श की बलि नहीं दी गई है क्योंकि यथार्थ का विश्लेषण करते हुए आदर्श की स्थापना ही साहित्य का चरम लक्ष्य है।

वर्तमान भूत का प्रतिफल और वर्तमान ही भविष्य का निर्माता है। वर्तमान परिस्थितियां बीती घटनाओं की प्रतीक हैं और वर्तमान घटनायें भविष्य का निर्माण करेंगी। अतः प्रस्तुत उपन्यास उस समाज और परिस्थितियों का संकेत मात्र है जो सन् १९३६ में घटित हुई थी और जिसका प्रतिफल वर्तमान दशा है। उपर्युक्त बातों पर विचार करने के पश्चात "चन्द्र" ने यह सोचा कि यदि पुस्तक प्रकाशित न हुई तो "चन्द्र" का परिश्रम ही व्यर्थ जायेगा। अच्छे बुरे का निणय तो पाठक स्वयं करेंगे। "चन्द्र" का कार्य तो हृदय में चलने वाले विचारों तथा मनो भावों को पाठकों तक पहुँचा देना मात्र है। मनुष्य विचार रखता है। उसका यह कर्तव्य है कि उन विचारों को समाज के समक्ष रखे। समाज स्वयं उस पर सोचेगा, विचार करेगा शायद उस विचार से देश तथा समाज का कुछ कल्याण हो जाय। इसी कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर यह "समय का फेर" महानुभावों के समक्ष प्रस्तुत है। यदि कहीं त्रुटियां या अशुद्धियां हों तो विज्ञ पाठक क्षमा करेंगे और अपने प्रोत्साहन का संबल देंगे। और यदि साहित्य देवता को कहीं इस शान्त "समय के फेर" की सुधि आ गयी तो मेरा सन्तोष द्विगुणित हो जायगा।

अन्त में हम श्रद्धेय श्रीयुत कृष्ण प्यारे लाल, जिला विद्यालय निरीक्षक, शिक्षाविभाग उत्तर प्रदेश, श्री युत साहित्यरत्न विद्या भूषण शेषमणि त्रिपाठी एम. ए बी. टी. भूतपूर्व प्रधानाचार्य राजकीय दीक्षण तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा श्रीयुत कैलाशनाथ जी श्रीवास्तव एम. ए. एल. टी. प्रधानाचार्य राजकीय जूनियर ट्रेनिङ्गकालेज, गोरखपुर एवं उन सभी मित्रों और हितैषियों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट किये बिना नहीं रह सकते जिनके सहयोग, सत्परामर्श और सहानुभूति के बल पर ही हम अपने इस साहित्यिक कृति को पूर्णता प्रदान करने में सफल हुए हैं।

—चन्द्र आजमी

समय का फेर

मानव जीवन ऐसा ठहरा कि इसमें अन्शमात्र भी ठेस लग जाने से परिवर्तन की छाया पड़ सकती है, और यह सभी उसकी आध्यात्मिक एवं काल्पनिक विचार धाराओं का प्रभाव होता है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि एक बालक के जो विचार बचपन में रहे हैं वही उसके भावी जीवन में भी सजीव रहेंगे। फिर भी यह सत्य है कि उसका प्रभाव अवश्य रहेगा, और उसके अन्धकारमय जीवन पर अपना प्रकाश डालता रहेगा। जिसे देखने से उसके जीवन का मुख्य सिद्धान्त ज्ञात हो सकता है। इसी आधार पर कहा गया है कि मनुष्य अपने जन्म के साथ ही कोई धर्म या दीन नहीं लाता है। यह उसके माता-पिता का प्रभाव होता है कि जिस धर्म या दीन में माता-पिता पले रहते हैं उनके सन्तान भी उन्हीं विचारों के वशीभूत रहते हैं, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता है कि वे सदा उन्हीं विचारों के ही वशीभूत रहेंगे।

जीवन एक विशाल समुद्र है और प्राणी उसमें एक नौका है। जीवन-सिंधु के थपेड़े से उलट-पुलट सकती है, ऐसे ही मानव-जीवन का सारांश ठहरा।

रमेश एक बालक था। बालकपन्न उसका निहायतन गरीबी में गुजरा। माँ बाप उसके बहुत गरीब थे। बहुत मुसीबत के साथ वह बालक अपनी शिक्षाकाल को फूलने-फलने के योग्य बनाया।

जिसका प्रभाव यह हुआ कि दुख व दर्द उसके जीवन का एक हिस्सा बन गया। मां बाप का दुखमय और सरल जीवन उसके छात्र-जीवन को भी उसी रंग में डुबोया था, किसी का दुखमय जीवन देखकर वह रो पड़ता था। शिक्षा-काल में उसके जीवन का यही ध्येय रहा "पढ़ना और सादा रहना।" सेवा भाव इस प्रकार था कि वह छोटा से छोटा काम करने को सर्वदा कटिवद्ध रहता था। स्कूल हो या घर जहां देखिए वह लिखते-पढ़ते ही दिखाई देता था। उपस्थित समय स्कूल की शिक्षात्मक जिन्दगी को वातावरण से वह कोसों दूर रहता था। कक्षा हो या बाहर, कभी वह किसी से मजाक करते नहीं देखा गया। दर्जा में उसकी यह दशा रही कि अगर किसी को किसी से मजाक करते देखता तो प्रथम बोलता नहीं और बोलता भी तो उसकी अवहेलना करता, यह कह कर कि "भई इस भद्र दिलग्गी से क्या फायदा?" और जब उससे नहीं रहा जाता तो क्लास से बाहर चला जाता। स्कूल की यह हालत रही, घर पर भी यही हालत रही।

रिश्ता में मजाक की जाने वाली औरतों से यही कहकर जवाब देता कि "भई आप लोगों को मुझसे मजाक नहीं करना चाहिए। आप लोग मुझसे बड़ी ठहरीं और मैं आप लोगों के सामने आप के बच्चे के समान हूँ। मजाक करना कहां तक आप लोगों का उचित ठहरा।" इस पर वह शर्मा कर चुप हो जाती थीं। और कुछ भी नहीं कहती थीं। घर हो या क्लास, हर जगह वह फकीर या साधु के नाम से पुकारा जाता था। लोगों का यही ख्याल था कि बाद शिक्षा-काल वह घर द्वार छोड़ कर कहीं वैराग्य न ले ले।

इस तरह रह कर उसने अपना विद्यार्थी जीवन समाप्त किया और मैट्रीकुलेशन की सनद प्राप्त की। अब उसके सामने रोजी

का सवाल खड़ा हो गया। इसी से कहा गया है कि जी से जहान है। पहले आत्मा तब परमात्मा। जब यह प्रश्न किसी मनुष्य के जीवन में आ पड़ता है. वह कितना ही उच्च विचारों का मनुष्य क्यों न हो, उसके तमाम विचारों और भाव इसी के उधेड़ बुन में रहकर बरबाद हो जाते हैं। इस संसार में रोजी के प्रश्न ने बहुत से होनहार बालकों के जीवन को नष्ट कर दिया, वरना वह दुनिया में रह कर क्या से क्या हो जाते। इस बच्चे के सामने सिर्फ अपने ही पेट का सवाल न था, मां, भाई बहिन सभी का था। मैट्रीकुलेशन की सार्टीफिकेट सिर्फ़ क्या कर सकती थी। बेकारी का मसला, उसके पास होने के चार साल पहले ही छिड़ गया था। जिधर देखिये, हर जगह, हर घर में, हर दफ्तर में इसी का प्रश्न छिड़ा रहता था। जहां कहीं संयोगवश एक जगह खाली होती, हजारों की दरख्वास्त उसके दूसरे ही रोज देख लीजिए। सायं प्रातः लाइब्रेरी में लड़कों और उनके संगरक्षकों की भीड़, अखबार के वान्टेड कालम पर रहती थी। कहने को तो वह अखबार पढ़ने आते थे, किन्तु वास्तव में उनको वही 'वान्टेड कालम' घसीट लाता था और लाता क्यों न। जीवन का सबसे प्रधान समस्या यह होता है। यह बालक भी इसी बेकारी की भँवर में चार छः महीने तक थपेड़ा खाता रहा। वह कभी अपनी जिन्दगी से बेजार होता और यह शब्द उसके दिल से निकलतेः—"ऐसे जिन्दगी से मरना अच्छा है"। और कभी इस जिन्दगी से छुटकारा पाने के लिए आत्म-हत्या के सामान भी इकट्ठा कर लिया करता था। इस वक्त उसकी आत्मा (concience) बिजली की तरह उसके दिल को ठेस देती थी कि ऐ नादान ! तू क्या कर रहा है? यह कहां तक उचित है ? यह दुनिया निराश और कमजोर दिल जैसे लोगों के लिए नहीं है। इतना कहना था कि उसको फौरन एक अंग्रेजी का पद्य याद आ गया।

"Life is not a bed of roses but is a bed of thorns"

(जिन्दगी फूलों का बिस्तर नहीं है बल्कि कांटों का बिस्तर है)

यह ख्याल का आना था कि उसमें एक किस्म की ताकत आ गई और वह अपने नीच काम से बाज आता है। उसी समय उसे कुछ पद्य याद आ गये और उसे वह गुनगुनाने लगा।

(दुनियां क्या है)

तमाशों की दुनियां, गुवारों की दुनियां।
उलट फेर करती है, सबको यह दुनियां॥
ईरादों की दुनियां, खुमारों की दुनियां।
सभी को हंसाती, रूलाती यह दुनियां॥
अमीरों की दुनियां, गरीबों की दुनियां।
एक दिन सबको, सुलाती दुनियां॥
न देती है दुनियां, न लेती है दुनियां।
महज खेल सब का, कराती है दुनियां॥
जो बनाया है दुनियां, बिगाड़ेगा दुनिया।
उसी की तरफ, यह इशारा है दुनियां॥
कहें चन्द्र सुन लो, न किसी की है दुनियां।
महज चन्द लमहे का, सपना है दुनियां॥

चार छः महीने मिहनत व जाफिशानी से वह शार्ट हैंड व टाइप राइटिंग (Short hand & type writing) सीखा है। सीखने के बाद ही उसको एक दफ्तर में अपरेंटिस की जगह मिल गई और वह बीस रुपया माहवार पर मुकर्रर हो गया। तनख्वाह तो बहुत थोड़ी थी। पढ़ने के वक्त कम से कम उसके २०) माहवार लगे होंगे लेकिन चारा ही क्या था, बेकार बैठने

से २०) की अपरैंटिसी कहीं अधिक था। क्योंकि उसे अपने एक परिवार के पालन-पोषण का भी प्रश्न था, किन्तु सब्र और सन्तोष से उतने ही में वह अपने एक परिवार के तीन चार प्राणियों का पालन करता रहा। इस तरह उसने दो साल तक इस तनख्वाह पर अपनी जिन्दगी व्यतीत की, लेकिन उसके धैर्य ने उसको अच्छा फल दिया। संयोगवश पोस्ट व टेली ग्राफ जनरल आफिस लखनऊ में एक टाइपिस्ट की जगह खाली हुई। अखबारों में इसके लिये विज्ञापन हुआ। रमेश की भी दृष्टि एक रोज "लीडर" के "वान्टेड कालम" पर पड़ी। उसके दूसरे ही रोज अपनी दरख्वास्त व सार्टीफिकेट टाइप करके वहां भेजा। कम्पीटीशन हुआ। कुल १२०० उम्मेदवार थे जिनमें रमेश भी था। टाइप और जनरल नालेज का इम्तिहान हुआ। रमेश ने बहुत अच्छा किया। लखनऊ से लौटने के दस रोज बाद रमेश को ३५) माहवार की नौकरी का हुक्म मिला। रमेश, हुक्म पाने के दूसरे रोज लखनऊ रवाना हो गया और काम करना शुरू किया। अब उसके परिवार वाले कुछ आसानी से अपना जीवन बिताने लगे। धीरे धीरे उसकी जिन्दगी में एक परिवर्तन होने लगा। जहां उसके वस्त्र, पहनाव के लिए केवल खद्दर की दो धोतियां और दो कुरते ही काफी होते थे अब इसके अतिरिक्त दो कोट, चार कमीज और चार धोतियां और उस पर कम से कम दो तीन पाजामे भी कम होने लगे। पहनाव के साथ साथ भोजन के सामान में भी परिवर्तन हुई। जहां तेल में बनी हुई चीजें विशेष समझी जाती थीं अब उनकी जगह घी में बनी हुई चीजें प्रयोग होन लगी। अब कहीं मिलावट घी में हो जाती तो भोजन करना कठिन हो जाता था। यह तो खान और पहनावे की बातें थीं। अब रहन सहन के सम्बन्ध को लिजिये। रहने के लिए एक खासा मकान की जरूरत हुई। वह भी कम से कम ५) माहवार से कम का न होना चाहिये

था। इसके पहले जहां ५) वाले मकान में कई मिल कर रहते थे अब अकेले उनको आवश्यकता पड़ी। साथ साथ बैठक में एक अच्छी खासी मेज और दो तीन अच्छी खासी कुर्सियां भी होनी चाहिये। यह सब सामान भी तैयार हो गया। दरवाजे पर और जंगलों में चिक भी लग गये। बैठक के सामने दरवाजा के ऊपर "बगैर हुक्म अन्दर आना मना है" का साइन बोर्ड अंग्रेजी के मोटे अक्षरों में लटकने लगा। इस तरह एक छोटी मोटी रईसी ठाट की मौज नजर आने लगी।

ऊपर की बातों को छोड़िये। अब गृहस्थी के प्रश्न को लीजिये। परिवार में अकेले तो पैदा नहीं हुआ था। माँ भाई और बहिनें थीं। भाई लोग भी समय के अनुसार अच्छी से अच्छी शिक्षा पाये थे और शिक्षा अनुसार कुछ न कुछ कमाते भी रहते थे। इस तरह सब ही लोग अच्छी परह जिन्दगी बसर कर रहे थे। जीवन में मसला स्त्री का भी आता है। अब उसकी भी जरूरत महसूस होने लगी और एक गृहस्थ जिन्दगी के लिये इसका होना जरूरी है। एक देहाती मसल है :—

"बिन घरनी घर भूत का डेरा।"

- — औरतें नहीं होती हैं वह घर भूत-पिशाच का जमघट समय से न भोजन भाजन होता है, न रहने सहने ता है। दुःख दर्द की बातें अलग रहीं।

इधर रमेश बाबू का समय बदलता हुआ देखकर उसके पट्टीदार, अड़ोस पड़ोस के लोग उस पर जलने लगे थे, लेकिन उनकी चलती ही क्या थी? कुछ दिनों तक उनका यह हाल रहा कि जब कभी कोई रमेश या उनके भाइयों की शादी के लिये आता

और उनसे पूछता कि इन बच्चों की हैसियत क्या है ? तो बहुधा वह लोग असल बात बताने के बजाय झूठी बातें कह कर शादी काट देते थे और जब कभी कोई उसके गांव का या बिरादरी का, इन बुरे कर्म का उनसे जिक्र करता तो यह बच्चा यह कह कर जवाब देता "सही, उन लोगों ने सच कहा, यहां तो खाने का ठिकाना ही नही है कहां से नई बहुओं के लिये होगा।" इस जवाब को सुन कर कहने वाला खुद शरमा जाता और कहता "जब तुम ही लोग उसके समर्थक हो तो उसका क्या इलाज।" हां, इन बच्चों की मां पर इन बातों का काफी असर होता और उस वक्त जब वह अपने सामने देखती कि महल्ले, अड़ोस पड़ोस और बिरादरी के हम उम्रवाले और यहां तक कि उनसे छोटे बच्चों की शादियां हो गई हैं और हो रही हैं और इस पर जब वह अपने पट्टीदार, गांव वालों के बुरे कर्म को सुनती तो वह जल भुन कर कबाब हो जाती थी। लेकिन जब कभी अपने बच्चों से कहती तो वे जबाब देते, "उन लोगों ने क्या बुरा किया।" कहावत मशहूर है :—

"खाने को यहां नहीं, चली भाड़ भुनाने"

सही, वह लोग हम लोगों के हक में अच्छा कर रहे हैं। क्योंकि एक दूसरे घर की स्त्री को लाकर उसकी जिन्दगी को नर्क बना देना कहां तक उचित ठहरा। जब अपने ही खाने का ठिकाना नहीं। मां रो धो कर अपने दिल की भभकती हुई आग बुझाती थी। इस तरह दो चार साल तक चलता रहा, लेकिन जब इन बच्चों ने देखा कि बुड्ढी मां कब तक अपने हाथों को जलाती रहेगी, जबकि उसका उठना बैठना दुशवार होता जा रहा है। न आखों से पहले की तरह दिखाई ही देता और और न हाथ पैर ही फुरती से चलता है, पका आम ठहरी। जब कभी भी एक

मामूली मौत जैसे हवा के बहने से टपक पड़े। तब उन्हों ने सोचा कि अगर घर में एक नई बहू आ जाय तो यह सब कष्ट दूर हो जाय और मां को भी कुछ आराम हो जाय। इधर इन बच्चों का जमाना दिन बदिन उन्नति पर था। उनकी बढ़ती हुई हालत को देखकर सैकड़ों आदमी उनकी शादी को दौड़ने लगे, वह भी एक से एक अच्छे। अब पट्टीदार और गांव वालों का कहां चलती थी। शादियाँ आनन फानन में हो गई, वह भी अच्छे घरों में जिसे देखकर वे लोग आश्चर्य करने लगे

रमेश बाबू की शादी एक अच्छे खानदान में हुई, बीबी पढ़ी लिखी तो जरूर थी लेकिन एक बड़े खानदान और एक बड़े परिवार में पैदा होने के कारण एक आराम पसन्द और खरचीली तबियत की थी। अपने नैहर से आने पर चार छः महीने तक वह ठेकाने से चलती रही. कुछ तो शर्म और इज्जत की वजह से दूसरे यह कि एक दूसरे के घर से आई थी और वह भी एक दूसरी ही दशा में रक्खी गई थी। जो कुछ शिकायत थी वह मकान की थी किन्तु वह शिकायत तुरन्त दूर तो हो नही सकती थी।

रमेश बाबू जब कभी छुट्टियों में दो चार रोज के लिये घर आए तो इन दो चार रोज के रहन सहन से ही भांप लिये कि बीबी एक आराम पसन्द और खरचीली तबियत की है इसलिये उसके सुधार के लिये अपने दिल में दो बातें तय की। एक तो यह कि उसकी अच्छी अच्छी शिक्षा हो जिसकी नींव रामायण और गीता पर हो और वह भी अपनी मातृ भाषा में। दूसरा यह कि उसकी अपव्ययी की रोक थाम हो। पर सवाल यह था कि यह शिक्षा दी जाय तो कहां, मकान पर हो नहीं सकती।

वजह यह थी कि मकान पर केवल उसकी मां थी वह भी बुढ्ढी व दुर्बल। शिक्षा की निस्बत सोलहवीं सदी की पुरानी तर्ज की गाड़ी थी (Old model car) जिसमें सिर्फ हर्फ 'क' 'ख' के सिवाय और पुर्जे ही नहीं थे। लिहाजा यह निव माडल कार उस पुराने पुर्जे की बुनियाद पर कहां चल सकती थी। रहे रमेश बाबू. उनको दो चार रोज की छुट्टियों में, वह भी चार छः माह के बाद मकान पर आने का मौका मिलता था। प्रथम तो डाकखाने में छुट्टियां नाममात्र को होती हैं। वह दफ्तर के काम से इस कदर लदे रहते हैं कि अक्सर छुट्टियों में जाकर वहां काम करना पड़ता था। मकान का जाना मुश्किल काम था। वह हमेशा सोचा करते कि किसी तरह पत्नी साथ रहे तो अच्छा है। खाने पीने, रहने सहने की आसानी हो जाय और साथ साथ उसकी शिक्षा दिक्षा साथ रह रह कर ठीक हो जाय। लेकिन नौकरी पर पत्नी के ले जाने का सवाल टेढ़ी खीर थी। मां और परिवार के सामने वह कह नहीं सकते थे कि मैं पत्नी को नौकरी पर ले जाना चाहता हूं। चाहे उनको कितनी ही कष्ट क्यों न हो। उनके दिल में उसके सुधार का कितना ही अच्छा विचार क्यों न सूझा हो, पर शर्म व हया से वह कुछ बोल नहीं सकते थे। सोचते थे अगर नौकरी पर ले जाऊं तो लोग और खास कर उसके घर वाले क्या कहेंगे कि बड़ा बेशर्म है। अभी बीबी के आने में देर न हुई कि लेकर नौकरी पर चलता हुआ। लेकिन कोई असली बात को क्या जानता, वह भी किसी को क्या मालूम।

उस तरफ कि बात यह ठहरी, इधर पत्नी ने भी करवट बदली और धीरे धीरे मियां जी का कान भरना शुरू किया। मुझको यहां पर यह तकलीफ होती है। आप के बगैर एक सेकण्ड

भी चैन नहीं मिलता है। एक रोज ऐसा हुआ, जब रमेश बाबू चार महीने के बाद दो रोज की छुट्टी में मकान आये और दो रोज ठहरने के बाद चलने लगे तो पत्नी से मुलाकात के लिये उसके कमरे में गये। पत्नी उसके पैरो को पकड़ कर रोने लगी और जब रमेश ने उसकी वजह पूछी तो वह गिड़गिड़ाते हुये शब्दों में बोली अब मैं यहा एक सेकेण्ड न रहूंगी और आप के साथ चलूगी।" उन्हों ने पूछा आखिर क्या बात है? किसी किस्म की तकलीफ है ? अगर हो तो बताओ। मां से कहूं वह दूर हो जाय। लेकिन वह सिसकते हुये बोली मुझे किसी बात यहां तकलीफ नहीं है और अगर है भी तो आप की। अगर यही करना था तो आपने शादी क्यों की? और गलती से की भी हो तो मुझे मेरे मैके क्यों न छोड़ दिया? सही, पत्नी ने एक मारके की बात कही थी, उसका जवाब कुछ हो ही नहीं सकता था। और वह वसूल की बात भी थी जिसका जवाब देना कठिन काम था। रमेश बाबू यह जवाब सुनकर चुप खड़े के खड़े रह गये। उसके जवाब के सामने उनकी सब ज्ञान विद्या मात थी। मजबूरन उनकी जबान से यह शब्द निकल पड़ा कि अब तुझे जरूर लिये चलूंगा। बाद में लोग मुझे बदनाम क्यों न करें। कमरे से निकले, सीधे मां के पास गये और दबी जबान में मां से कहा अम्मा! एक मामूली बात तुझसे कहना चाहता हूँ, अगर हुक्म हो तो कहूँ। उसने कहा—बच्चा कहो क्या कहना है। अम्मा मैं यही कहना चाहता हूँ कि "उनकी तबियत कुछ दिनों से खराब है, शायद आपको मालूम नही है यहां पर उनकी दवा नहीं हो सकती। यहां पर जो वैद्य जी हैं वह पूरे निरक्षर भट्टाचार्य हैं, खांसी और पेट के चूरन के सिवाय उनके पास कुछ होता ही नहीं। स्त्रियों की बीमारियों की वह क्या दवा कर सकते हैं। शहर के सिवाय और कहीं

ठीक दवा हो नहीं सकती। इसके अतिरिक्त दिन व रात इन्हें मेरी निगरानी में रहना होगा। मां भी एक समझदार औरत थी, बेटे की बात सुनकर वह ताड़ गई। झट बोल उठी इसमें क्या हर्ज है। बड़ी अच्छी बात कही और मैं भी यही कहना चाहती थी लेकिन डरती थी कि तू कहीं इसे बुरा न मान लो। क्योंकि मैं अक्सर देखती हूँ तुम्हारे चले जाने पर जब कभी बहू जी की तबियत खराब हो जाती है, इधर उधर दौड़ धूपकर दवा मँगानी पड़ती है, पानी गर्म करना पड़ता है, बाहर भीतर ले जाना पड़ता है, खाना बनाकर सुबह व शाम खिलाना तो दूसरी ही बात ठहरी। भय्या ! मेरी परेशानी और दूनी हो जाती है। उस पर भय्या ! तुम जानते ही हो जब से तुम्हारे पिता जी का स्वर्गवास हो गया मेरा यह प्रतिदिन का नियम हो गया है कि प्रातः ४ बजे सरयू स्नान को चली जाती हूँ वहां से घण्टा आध घन्टा पूजा-पाठ के बाद लौटती हूं, लेकिन जब से यह बहू घर में आई हैं उसी की देख भाल में रह जाती हूँ, छुट्टी नहीं मिलती। हफ्ते दो हफ्ते में मुझे सरजू स्नान करने का अवसर मुश्किल से मिलता है पूजा पाठ तो अब बिल्कुल छूट ही चुका है। भय्या ! तुझे मालूम है कि जब तुम्हारे पिताजी तुम लोगों को नन्हें नन्हें छोड़ कर मरे इस झोपड़ी में पड़ी तुम लोगों के साथ अपने दुःख दर्द को काटती रही। तरह तरह की आफतें मुझ पर आईं, सहन किया किन्तु अपने इस परम धर्म को न छोड़ी। स्नान के पहिले जब बिस्तर से उठती मकान में झाड़ू लगाती, आने पर तुम लोगों को नाश्ता और खाना बनाकर खिलाती, और स्कूल भेजती, तब मुझे कहीं दम (मारने) को फुरसत मिलती थी। उसमें भी सिवाय राम नाम जपने और गृहस्थी काम के और कुछ न होता था। न मुझे किसी औरत से गप लड़ाने का मौका मिलता था और न मैं उसे पसन्द ही करती

थी। भय्या ! मैं एक बात और कहती हूँ, शायद मैंने तुझसे बचपन में बताया होगा और मैं आशा करती हूं कि वह तुझे याद भी होगी। वह शब्द मरते समय, अन्त में तुम्हारे पिताजी ने मुझसे अपने सिर पर मेरा हाथ रख कर कहलाया था और उसके लिए उन्हों ने मुझसे तीन मरतबा बचन भी ले लिया था। वह बात महज इतनी थी :—"देखो, मैं तुझे एक बात बता कर हमेशा के लिये इन आंखों से ओझल हो रहा हूँ। वह यह है यह दुनियां मर्त्यलोक है, यहां पर जितने जीवधारी हैं वह एक न एक दिन जरूर नाश होंगे ; कोई यहां पर हमेशा के लिये नहीं आया है, इस मर्त्यलोक का यह नियम है कि अपने कर्मानुसार रह रह कर चोला बदलता रहता है, चोला तो बदलता ही रहता है लेकिन आत्मा नहीं मरती, और आत्मा से ही परमात्मा मिलता है, इसलिए यह प्रतिज्ञा करो कि अब से तेरा जीवन उस प्रभु के चरणों की सेवा में रहेगा। और वह प्रभु तेरे इन नन्हें बच्चों की मदद करेगा।" तब से मेरा यह नित्य का कर्म हो गया है। यह कहना था कि उसकी आंखें आसुओं से डबडबा गईं और वह फूट फूट कर रोने लगी। उसका असर रमेश पर हुआ और वह भी रोने लगा। फौरन मां उठती है, रमेश की आखें अपने आंचल से पोंछती है और कहती है बेटा ! यह क्या कर रहे हो ? तुम पुरुष हो, औरतों की तरह क्यों रोते हो ? दुनियां में रहते हो, हजारों अच्छे बुरे रोज तुम्हारे सामने देखने और सुनने में आते हैं। उनसे शिक्षा लो। यह तो तुम्हारे पिताजी के अन्तिम शब्द थे, याद आ गये। इसलिये रो पड़ी और यों तो सदा रोती ही रहूंगी। तब रमेश ने अपने को रोक कर कहा, अम्मां ! अगर पिता जी के अन्तिम शब्द तुम्हारे लिये है तो हमारे लिये भी हैं। इसलिये मैं भी रोता हूँ। मां, बेटे का जवाब सुनकर चुप हो गई। और दोनों एक दूसरे के गले मिलकर फूट फूट कर रोने लगे।

इस तरह घण्टा पौन घण्टा बीत गया तब जाकर चुप हुये। उसी रोज रमेश बाबू ने अपनी अनुपस्थिति की एक प्रार्थना पत्र तार द्वारा भेज दी। यह लिखते हुये कि चन्द जरूरी गृहस्थी के काम आ जाने से रुक गया हूं। दो दिन की अनुपस्थिति स्वीकार की जावे।

रमेश बाबू दो रोज के लिये घर और ठहर गये। अब उनके समक्ष दो प्रश्न उपस्थित थेः-(१) बीवी को अपने साथ ले जाऊँ या (२) माता जी के साथ छोड़ दूं। लेकिन बीवी कब रुकने वाली, वह भी शैतान की अतड़ी। आखिर यही तै किया कि उसे साथ ले जाऊँगा। तीसरे रोज जब जाने लगे तो बीवी को भी साथ ले लिया। चलते वक्त माँ ने बहू की आरती उतारी और आशीर्वाद देकर विदा किया। और कहा बहू जी अपने पहुँचने की खैरियत भैया से लिखा कर या खुद लिख कर दूसरे रोज डाक से भेज देना। रुखसत के वक्त माँ के आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। इधर भी आँसुओं की धारा पहले ही से जारी थी, दिली मुहब्बत के भाव होते हैं। बहू ने अन्तिम वक्त माँ का पैर छू नमस्कार किया और इस के बाद रमेश भी। दोनों इक्के से स्टेशन रवाना हुए। बिछुड़ने का गम बहू पर भारी था, रस्ता भर सिसिकते हुए आई। दिल में कहती थी, कहां से मैं अपने आने को कही। दुसरे लोग और घर वाले क्या कहेंगे। बहुत बड़ा पाप और अनर्थ किया, लेकिन मारे डर के बहू बोलती न थी। कहते हुए कि मैं तो इतनी जिद की। वर्ना बाबू जी मुझे अपने साथ न लाते। खट खट करता हुआ इक्का स्टेशन आ पहुँचा। रेलगाड़ी पहले ही से तैयार खड़ी थी। रमेश फौरन इक्का से उतरा, सामान गाड़ी में रखवाया, बहू भी गाड़ी में बैठी, टिकट लेकर ज्यों गाड़ी में बैठे, गाड़ी ने सीटी दी और चलती हुई।

रमेश बाबू का मकान रेलवे लाइन के किनारे पर था। स्टेशन से तीन मील की दूरी पर। ट्रेन से आते जाते वक्त मकान देखने की नौबत आती थी। गाड़ी धक धक करती हुई गाँव के सामने आ गई। रमेश ने बहू से उंगली उठा कर खिड़की से इशारा किया, देखो यही मेरा गांव है और वही तुम्हारा मकान है। रमेश और बहू ज्यों ही सर निकाल बाहर देखते हैं तो क्या देखते हैं कि दरवाजे पर एक औरत खड़ी है। बहू ने इशारतन बात करना चाही, लेकिन जवाब न मिला। मिस्ल पत्थर की मूर्ति के खड़ी थी। न बदन में जुंबिश थी और न हाथ पांव में ही। बहुत गौर से देखने से मालूम हुवा की आंखों से आँसुओं की धारा जारी है। इतने में गाड़ी सन से आगे निकल गई। यह शोकाकुल मूर्ति सामने से ओझल हो गई। वह दोनों अवाक बवाक से रह गये, और एक दूसरे का मुंह देखते ही रह गये। इतने में गाड़ी फिर सीटी दी और खट खट करती हुई अगले स्टेशन पर जा रुकी। मुसाफिर उतरना चढ़ना शुरु कर दिये। फिर उसने सीटी दी और रवाना होगई। इस तरह रात भर की यात्रा के बाद दोनों दूसरे रोज एक वजे दिन को लखनऊ जंकशन "चारबाग" पहुंचे। कुली को आवाज दी। सामान उस के सिर पर दिया। अपने और बीबी दोनों गेट से टिकट देकर बाहर निकले। टाँगा और इक्का वालों की जमघट लगी हुई थी। एक ताँगा वाला बढ़ कर आगे आया। बोला-बाबू जी! आप को कहाँ चलना है? समान इस ताँगा पर रखवाइये, मैं चलने को तैयार हूँ। बाबू जी ने कुली को इशारा किया और कुली ने कुल सामान उस ताँगे पर रक्खा। आप और बहू दोनों टाँगा पर बैठे और अमीना वाद की राह ली। बाबू जी कहाँ सुरैया होटल में एक कमरा किराया पर ले कर रहते थे। वहीं जा कर टाँगा रुका। बाबू ने होटल के नौकर टहलू को आवाज

दी-टहलू यहां आओ, यह सामान ऊपर ले चलो। टहलू बोला "बाबू जी, हाजिर" कहने की देर थी, आ पहुँचा, सामान उतारने लगा। इधर बाबू जी बहू को लेकर ऊपर गये, अपने कमरे का दरवाजा खोला, दोनों अन्दर दाखिल हुए। इधर नौकर सामान लेकर फौरन कमरे में आया और सब सामान एक जगह रक्खा। बाबू जी ने टाँगे का किराया नौकर के हवाले किया कि जा कर उसको देदो। नौकर गया, पैसा देकर लौटा तो बाबू जी ने उससे कहा जाओ महराज से कह दो थालियों में खाना तैयार करके यहां लावें। क्योंकि मुझे अभी भोजन करके कार्यालय जाना है। कहने की देर थी, नौकर जाकर कहता है, पानी ला कर मेज पर रखता है। इधर अभी यह लोग हाथ मुँह धो ही रहे हैं कि महराज दो थालियों में भोजन लाकर मेज पर रखते हैं। बीवी भोजन करने से शरमाती है, लेकिन रमेश के जिद करने से वह किसी तरह खाने को तैयार हो जाती है। रमेश कहते हैं-यह परदेश की बात है, यहां पर शरमाने से काम नहीं चल सकता। दोनो खाना खाते हैं, रमेश अपने कपड़ों को बदलता है और दफतर की राह लेता है।

वहू जी कमरे में क्या देखती हैं, एक तरफ एक नेवार की चारपाई पड़ी हुई है, इस पर एक अच्छी खासी तोशक सफेद चादर से आरास्ता कमरे में एक अलमारी है जिसके ऊपर के हिस्से में चन्द अंगरेजी और चन्द हिन्दी की किताबें रक्खी हुई हैं। नीचे के हिस्से में चन्द शीशियाँ रक्खी हुई हैं जिन पर अंगरेजी हरफों में लेबुल चस्पा हैं। जिसके पढ़ने और देखने से मालूम होता है कि इन शीशियों में अंगरेजी दवाइयाँ मँगाई गई थीं। एक तरफ एक शीशी में गुलरोगन रक्खा हुआ है। दीवारों पर नजर जब उनकी दौड़ी तो क्या देखती हैं कि बीच दीवार

में चारपाई के सामने रमेश बाबू की फोटो टँगी हुई है। मौजूदा शक्ल से जमीन आसमान का फर्क नजर आता है। यह उस समय की फोटो थी जिस समय रमेश ने मैट्रीकुलेशन के इम्तिहान के एक हफ्ता पहले अपने क्लास के साथियों के साथ बैठकर ली थी। फोटो के देखने से मालूम होता था कि कितनी सादी उनकी जिन्दगी उस वक्त थी। बदन पर खद्दर की एक धोती और एक कुरता है। सिर पर एक गाँधी टोपी और पैरों में एक मामूली चप्पल दीख पड़ रहा है। लेकिन अब बाबू जी के लिए दो दो पाजामे, चार धोतियाँ, चार कमीज, तीन कोट और दो जोड़े जूते कम होते हैं। इसके अतरिक्त कमरे में दो चार तस्वीरें टँगी हुई हैं, जिनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वामी रामतीर्थ और महात्मागाँधी की तस्वीरें विशेष प्रकार शोभा देती हैं। जंगले के सामने कमरे में एक खासी छोटी मेज पड़ी हुई है, जिस पर एक अच्छा राइटिंग पैड पड़ा हुआ है जिसके एक हाशिया पर सब से ऊपर "श्री युत रमेश" लिखा हुआ है, और जो बिल्कुल सादा आसमानी रंग लिए हुए है। और एक अच्छा सुन्दर शीशे की कलम दान सहित दो अच्छी कलमों के पड़ा हुआ है। इसके अलावे दो कुर्सियाँ और एक अच्छा स्टूल भी है। आलमारी के नीचे वाले हिस्से में एक तरफ डम्बूल और चेष्ट-एक्सपैंड रक्खा हुआ है जिसके देखने से मालूम होता है कि रमेश बाबू को व्यायाम में भी दखल है। इसी वजह से उनका बदन सुडौल और सीना निकला हुआ है। बहू आलमारी से एक हिन्दी की किताब उठाती है जिस पर मोटे हरफो से "आटो वाइग्राफी आफ जवाहर लाल" यानी जवाहर लाल का जीवन चरित्र लिखा हुआ है। दो चार वरक चारपाई पर पड़े पड़े देखती है, देखते देखते सो जाती है। सफर से आई थी, वह भी एक रात की जगी हुई, फौरन खर्राटें भरना शुरु कर दीं। इधर

रमेश एक घण्टा पहले ही दफ्तर से छुट्टी लेकर चले आते हैं। दरवाजा खटखटाते हैं आवाज नदारद। बीवी लम्बी ताने पड़ी है और नाक की खर्राट की आवाज आती है। बहुत आवाज देने और खटखटाने के बाद चौंक कर उठती है, पहले सहमती है लेकिन जब रमेश की आवाज पहचानी तो दरवाजा खोल दी है। रमेश कमरे में दाखिल होते हैं, कपड़े उतार कर खूंटी पर टांगते हैं, और एक कुर्सीपर बैठ जाते हैं। बहू पंखा उठाती है और झलना शुरु करती है। रमेश धूप और गर्मी से बद हवास हैं। पूरे पन्द्रह मिनट के बाद उसके होश ठिकाने आते हैं। कहते हैं तुम तो खूब सोती हो। पन्द्रह मिनट से मैं खड़ा था, कई आवाज देने और खटखटाने के बाद कहीं जागी हो। बहू कहती है, क्या करूँ, सफर की थकान और रात भर जगी होने के कारण सो गई, वर्ना मैं इतनी नहीं सोती। पानी लाती है, रमेश हाथ मुँह धोते हैं और जो कुछ नाश्ता मकान से लाई थी बहू ला कर देती है, नाश्ता करते हैं और जाकर चारपाई पर लेट जाते हैं। इतने में एक झपकी आ जाती है और वह सो जाते हैं। आंख एक-बारगी खुलती है, देखते है कि बहू सिरहाने स्टूल पर बैठी हुई सिर में तेल रख रही है। और थम थम कर पंखा झलती जाती है। रमेश की आंख एक बएक खुलती है और घड़ी पर उसकी नजर पड़ती है तो क्या देखते है कि सात बज रहा है। बहू से पानी मांगते हैं, मुँह हाथ धो कपड़ा बदलते हैं और बहू से कहते हैं कि तुम्हारी तबियत घबड़ाई हुई होगी। घर पर माँ और दूसरी औरतें थीं, जिन से दिन भर बोलती चालती थी। यहां पर कौन ठहरा? दूसरे तुम लखनऊ ऐसा शहर नहीं देखी होगी और खास कर अमीनाबाद पार्क वो हजरतगंज जो इस शहर में महत्व रखते हैं, चलो तुम्हें दिखा लाऊँ। बहू कपड़ा बदलती है

और तैयार हो जाती है। रमेश छड़ी उठाता है और कुछ पैसे जेब में रख कर बहू के साथ दरवाजे से बाहर आता है। दरवाजा बन्द करता है, नोकर से इत्तला करता है कि महाराज जी से कह देना कि हम दोनों के लिए खाना तैयार रक्खेंगे। हम लोग अभी बाजार से दो तीन घण्टा बाद आते हैं। अगर कोई हम लोगों की तलाश में आवे तो यह कह देना कि बाबू जी कहीं कुछ काम से गये हैं। दस बजे तक वापस आवेंगे। उनका नाम पूछ लेना कि कहां से आये हैं और क्या काम है?

बहू को यह पहला मौका एक बड़े शहर में घूमने का होता है झट एक अच्छा टाँगा घण्टे के दर पर किया गया अमीनाबाद पार्क, हजरत गंज, सिकरेट्रियेट होते हुए चलने को कहा गया। रास्ते में जितनी अच्छी इमारतें पड़ती थीं उनको दिखाता हुआ और उनका पहचान कराता हुआ तांगा सिकरेट्रियेट के सामने से होता हुआ गुजरा। रमेश ने बहू से बताया कि यही सिकरेट्रियेट है। यही हमारे सूबा की गवर्नमेंट का सब से बड़ा दफ्तर है। यहीं पर हमारे सूबे के बड़े बड़े अहलकारान काम करते हैं और यहीं पर सूबे की मीटिंग की बैठक होती है। यहीं से कानून का रद्दो बदल हुआ करता है। देखो, कितना बड़ा और कितना साफ सुथरा है। इसके पास वाली वह इमारत जो दिखाई दे रही है वही मेरा दफ्तर है और मैं वहीं काम करता हूं। रमेश बाबू उस समय General Pst and Telegraph office में काम करते थे और ४५ रु० माहवार तनख्वाह पाते थे। इसकी भी एक अच्छी खासी इमारत सिकरेट्रियेट की इमारत के पास ही बनी हुई है। इस के बाद तांगा वाले ने पूछा बाबू अब आप को किस तरफ चलना होगा। बाबू बोले, अब गोमती नदी की सैर कराओ।

और उस सड़क से चलो जिस सड़क से पुराना किला और अजायब घर पड़ता है। तांगा टक टक करता हुआ लखनऊ अजायब घर के पास खड़ा हुआ। रमेश ने बहू को इशारा करके कहा कि देखो यह इस सूबे का अजायब घर है। यहां पर बड़ी ही अद्भुत २ वस्तुयें देखने को आती हैं चूंकि अब ७½ बज रहे हैं इसलिए अजायब घर बन्द है नहीं तो तुम्हें दिखा देता। किसी छुट्टी के दिन आकर देख लिया जायेगा। यह जो थोड़ी दूर पर इमारत के खण्डहर दिखाई देते हैं, यही नवाब अवध का किला था। यहीं पर आखिरी समय में अंग्रेजों और नबाब से लड़ाई हुई थी। तांगा इशारा करने से फौरन गोमती नदी के हाशिया वाली सड़क से चला, आठ का समय था, चांदनी रात थी। गर्मी का मौसम था। एक विचित्र दृश्य नदी में दिखाई देता था और शीतल पवन के झोंके जो बदन से लगते थे जिनसे बदन में फरहत हासिल होती थी, चल रहे थे। तांगा को सड़क पर छोड़ बहू और खुद एक पत्थर के टीले पर जो ठीक पानी के निकट गुंबजनुमा बना हुआ था, जिसके ऊपर जाने के लिए एक सीढ़ी लगी हुई थी, मालूम नहीं किस प्रयोजन से बना था। उस पर जाकर बैठे। देखते क्या हैं, दरिया में कुछ दूरी पर मुश्किल से एक फर्लांग होगा, पानी में दरिया के एक किनारे से दूसरे किनारे तक कुछ कुछ दूरी पर चिराग की रोशनी की एक सीधी सड़क आमने सामने दिखाई देती थी। हवा के मन्द झोंके से रह रह कर टिमटिमा कर एक बारगी रोशनी हो जाती थी। उसके अगल बगल में सफेद फूलों की एक सड़क दिखाई देती थी। देखने में बड़ा भला मालूम होता था। मालूम होता था, किसी मनौती के सिलसिले में यह आर पार का सेहरा चढ़ाया गया था। उर्मिला, रमेश के जानू पर सिर रख कर दरिया के बहार का लुत्फ ले रही थी। और हवा की मन्द लहर में उसकी नीली

साड़ी इधर उधर उड़ रही थी और उस समय पंखे का काम कर रही थी। अचानक हवा का वेग बढ़ा, रोशनी लुप्त हो गई, सन्नाटा छा गया, सायं सायं करते हुए हवा के साथ दरिया के पानी की आवाज होने लगी। अचानक कुछ बादल बढ़कर चांद के मुख को घेर लिए। कुछ देर के लिये अन्धेरा छा गया। रमेश मधुर स्वर में उसकी तरफ देख कर यह (गजल) गीत गाने लगाः—

मुख से परदा हटा ले ऐ चांद तू,
जरा बिमार का हाल सम्भल जायगा।
कितने दर्शक खड़े इन्तजारी में हैं,
अभी हालत उनकी सम्भल जायगी।
जरा जादू नजर तू उठाले ऐ चांद,
कितने घायल का दिल जो सम्भल जायगा।
मौत में भी खुशी का पर्दा रहा,
मरने वाले को हालत सम्भल जायगी।
जरा नजरों से नजरें मिला ले तू यार,
मोमकीन बिमार का दम निकल जायगा।
कहीं लानझन तेरे सर न बधे,
वरना पछताना ही साथ रह जायगा।
मौत का आना जरूरी रहा,
परतोहम्ब लग फर रह जायगी।
अब से सम्भल जाय ऐ चांद तू,
मुख से परदा हठा ले तो क्या होयेगा।
तुझे देवता समझ वह पुजेंगे या,
तू उनकी नजरों में घुस जायगा।
उनका माथा तेरा, चौखट होयेगा,
तूदर नजरे भगत भगवत होयेगा।

तेरा करना यह होगा वैद्य सुखेन से अधिक,
कितने मुर्दों में जान खुद आ जायगी।
मुझको तुझ पर भरोसा है काफी यहाँ,
वरना सारा जहां जल के रह जायगा।

इन्हीं पंक्तियों को उर्मिला भी अपने मिठे, मधुर स्वर से दोहरा रही थी। रह रह कर यह सोने में सोहागा का काम कर रही थी। रमेश बोल उठा उर्मिला तुम बहुत सुन्दर गाती हो। अच्छा हुआ बांस से बन्शी मिल गई। उर्मिला अपने मुख से घुनघट हटा ली और एक प्यार की दृष्टि से रमेश की तरफ देख कर मुस्करा दी। उधर चांद के मुंह से बादल हट गया। रमेश खिलखिला कर हंस पड़ा और अचानक एक स्वर निकल पड़ा।

"चादनी रात हो, हो दरिया का किनारा।
साथ में शोख हो, हो हाथ में प्याला"।

अभी यह मिसरा खतम नहीं होने पाया था कि एक बारगी टांगा वाल कमबख्त की आवाज आई। "बाबू जी, बाबू जी, आइये, देर हो रही है" ९३ का वक्त हो रहा है। एक बारगी उस कमबख्त की आवाज ने उसकी जिन्दगी के लुत्फ में रोड़ा अटका दिया। चारा ही क्या था? रात ज्यादा हो गई थी, महाराज कृष्ण पक्ष का कोप बढ़ रहा था। वह अपनी हुकूमत १० बजे से आरम्भ करने जा रहे थे। इस वजह से अभी से कुछ चांदनी फीकी पड़ रही थी। रमेश और उर्मिला एक दूसरे के हाथ पकड़े आगे बढ़े और टांगे वाले को अमीनाबाद पार्क चलने को कहा।

टांगा फिर अपनी टक टक आवाज़ के साथ अमीनाबाद पार्क के फाटक पर खड़ा हो गया। उर्मिला और रमेश टांगे से उतरे। रमेश ने तीन घन्टे की मजदूरी ।~) की दर से ॥।≡) और

पान पत्ते के लिये इनाम दिया। रमेश महज़ दूकानों की सैर करते हुए, बड़ी बड़ी दुकानों को दिखाते हुये पार्क के अन्दर घुसे। पार्क में घुसना था कि घन्टाघर की घड़ी ने टन टन करते हुये १० बजाये। उर्मिला के साथ रमेश बढ़ता है तो क्या देखता है कि घन्टाघर के इर्द गिर्द तफरीह करने वालों की बैठक बेंचों पर लगी हुई है। इर्द गिर्द सिर मालिश करने वालों के हाथों में शीशियों के खानादार बक्स देखने में आते हैं जिनमें कई तरह के तेलों की शीशियां रक्खी हुई हैं। सिर की मालिश की आवाज देते हुये सुनाई देते हैं। उर्मिला पूछती है कि यह कौन हैं ? रमेश जबाब देता है "यह लखनऊ की खास देखने वाली चीजों में से एक चीज है।" जो कोई भी यहां के इस पार्क में तफरीह करने आते हैं और यदि वे सिर में तेल की मालिश कराना चाहते हैं तो वे उनके सिर पर तेल की मालिश करते हैं और उनसे उज्ररत पाते हैं। यह लोग मालिश की फन में इस कदर कमाल रखते हैं कि सिर में कितना ही दर्द हो, १५ मिनट की रगड़ के बाद काफूर हो जाता है। इसके बाद रमेश और उर्मिला मन्दिर की तरफ बढ़ती हैं। वहां मन्दिर के अन्दर दाखिल होकर मन्दिर की मूर्त्ति के सामने सिर झुका कर नमस्कार करते हैं और बाहर आते हैं। इतने में घड़ी में देखते हैं कि १०॥ बज गया है। होटल की राह लेते हैं। वहां पहुँच कर सीढ़ियों के जरिये ऊपर जाते हैं और कमरा खोल कर अन्दर दाखिल होते हैं। नौकर को आवाज देते हैं, नौकर पानी लाता है, हाथ मुह धोते हैं। महराज दो थालियों में खाना लाता है दोनों एक ही मेज पर बैठकर खाते हैं, हाथ मुह धोकर बिस्तरे पर जाते हैं, इधर उधर की गप होती है, निद्रा देवी का आगमन होता है दोनों उसकी गोद में सो जाते हैं। इस प्रकार एक सप्ताह तक काम चलता रहा। महराज दोनों वक्त नाश्ता और खाना बनाकर

लाता, नाश्ता और भोजन करते। शाम को कभी अमीनाबाद पार्क और कभी अमीनुद्दौला पार्क और कभी विक्टोरिया पार्क की सैर करते और कभी दरिया गोमती की भी सैर किया करते। लेकिन रमेश ने एक सप्ताह होटल की जिन्दगी में देखा कि खर्चा अधिक पड़ रहा है और न कोई खास आराम ही देखा। तो उन्होंने सोचा कि शहर में एक मकान पांच सात रुपये किराया का क्यों न ले लिया जाय? लेकिन लखनऊ जैसे शहर में पांच सात रुपये का मकान मिलना मुश्किल था। लेहाजा बहुत तलाश करने पर एक मकान १२) किराया पर मिला जो दो मंजिला था। नीचे और ऊपर मंजिल का छः छः रुपया किराया था। रमेश ने अपने दफ्तर के एक बाबू को हिस्सादार बना लिया। नीचे के हिस्से में उनके दफ्तर के बाबू अपनी बीवी के साथ रहने लगे और ऊपर के हिस्से में रमेश अपनी बीवी के साथ रहने लगा। दफ्तर जाने पर दोनों की बीवियां एक जगह रहती थीं। कभी रमेश के यहां और कभी उमेश के यहां। पाठकगण मैं यह बताने से भूल गया, रमेश के दफ्तर वाले बाबू का नाम उमेश और उनकी बीवी का नाम शान्ति था। शान्ति के देखने भालने से उसके चेहरे से शान्ति झलकती थी। इस्म बा मुसम्मा थी। यानी जैसा नाम था वैसा ही उसमें गुण भी। एक साथ का रहना, सहना, उठना, बैठना, हंसना, बोलना रहता था। दिन भर यह दोनों औरतें एक साथ रहती थीं। सुबह शाम दोनों दोस्त एक साथ उठते बैठते थे। कभी दफ्तर की और कभी अखबारी बातों पर बहस मुवाहिसा हुआ करते थे। कभी घूमने या कभी सिनेमा देखने जाना होता तो एक साथ का जाना होता था। बहुत आनंद की जिन्दगी व्यतीत करते थे। रमेश ने उर्मिला को अच्छी खासी तालीम देने के लिए तुलसी कृत रामायण और गीता की पुस्तकें खरीद लीं। रामायण और

गीता दोनों अर्थ सहित थे। ताकि उर्मिला के पढ़ने और समझने में आसानी हो। इसके अतिरिक्त रमेश स्वयं ही हिन्दी और संस्कृत का विद्वान था। रात में विश्राम करने के पूर्व १ घण्टा रामायण और गीता के अर्थ समझाने में व्यतीत करता था। इसके अलावा गङ्गा मेमोरियल लाइब्रेरी का मेम्बर था, वहां से कभी अपने पढ़ने के लिये और कभी उर्मिला के पढ़ने के लिये नारी धर्म की पुस्तकें लाता था। दोनों पढ़ते लिखते बड़े ही आनन्द और प्रसन्नता का जीवन व्यतीत करने लगे। एक बार रमेश के हलक में फोड़ा निकल गया था, दफ्तर का आना जाना दूभर हो गया था। न तो खाना खाया जा सकता था और न पानी पिया जा सकता था तपिश की वजह से दिन रात गर्मी से बदहवास रहता था। रात दिन का चिल्लाना और चारपाई पर करवटें बदलना होता रहता था। लेकिन उर्मिला ने उस समय जिस जाँ फिशानी और मुस्तकिल मिजाजी से काम लिया उसे देख कर सब लोग दंग रह गये थे। बुखार की हालत में रमेश को गोदी में लिये पड़ी रहती थी। पानी उबालती थी, पाखाना पेशाब अपने हाथों साफ करती थी जिस तरह मुमकिन हो सकता था आराम देती थी। डाक्टर को पूरा हाल लिख कर नौकर के हवाले करती और बुलाती थी। अगर कभी रमेश की तबियत ज्यादा खराब हो जाती तो दौडती हुई उमेश के घर जाती, शान्ति से सब बातें कहती, जिन चीजों की जरुरत होती थी मँगवाती या डाक्टर साहब को बुलवाती थी। जब कभी रमेश की तबियत ज्यादा खराब हो जाती और उर्मिला और रमेश ज्यादा घबड़ा जाते तो इधर उधर की बातें कर के तसल्ली दिलाता, शुक्र परमात्मा का कहिये कि बहुत जल्द हलक का फोडा फूट गया रमेश धीरे धीरे कर के एक माह में खासा तन्दुरुस्त हो गया।

रमेश के अड़ोस पड़ोस में एक वकील साहब थे। वह माथुर कायस्थ थे जिनका नाम प्यारे लाल माथुर था और जिनकी धर्म पत्नी का नाम लीलावती माथुर था। किन्तु वह लीला के नाम से प्रसिद्ध थीं वकील साहब खुद एम० ए० फर्स्ट डिविजन अंग्रेजी से, लखनऊ यूनिवर्सिटी से थे और उनकी बीबी मैट्रिक सेकेन्ड डिवीजन और इन्टरमीडिएट फेल थीं। वकील साहब का नामिनेशन मुन्सफी की लिस्ट में गवर्नमेंट की तरफ से हो गया था किन्तु मुन्सफी के पद पर दो ढाई सौ पर जाना और काम करना पसन्द न किया और नामंजूर कर दिया। वकील साहब की खासी आमदनी हजार बारह सौ की थी। मकान आलीशान था और साथ साथ खूब सजा हुआ था। मकान के सामने एक अच्छा खासा सहन था जिसमें हर तरफ फूलों की क्यारियां बनी हुई थीं। मकान बिल्कुल बिजली की रोशनी से सजा था। मकान के ऊपर बांस के दो खम्भे लगे हुए दिखाई देते थे जिससे मालूम होता था कि मकान में रेडियो लगी हुई थी। सहन और बैठक में कुर्सियों की ढेरी लगी हुई थी। वह भी एक से एक नई डिजाइन की। फाटक के अन्दर घुसने पर वकील साहब का बैठक दिखाई देता था जिसमें एक अच्छी खासी मोटी दरी और कालीन का फर्श लगा हुआ था। अगल बगल आलमारियों में जनरल ला और कानून की किताबें भरी हुई थी। फाटक पर एक लम्बी चौड़ी तख्ती लगी हुई थी जिस पर मोटे अक्षरों में लिखा हुआ था "प्यारे लाल माथुर एम० ए०, एल० एल०, बी०, लखनऊ एडवोकेट" इसके अतिरिक्त सवारी के लिये एक अच्छी फिटन और एक अच्छी कार भी थी। हारमोनियम और प्यानों की रागिनी रोज सुबह शाम सुनने में आती थी। कभी रेडियो से गाने सुनने में आते थे और कभी इस्पीचें। इन चीजों के देखने से मालूम पड़ता था कि वकील

साहब एक बड़े पोजीशन के आदमी हैं और लखनऊ जैसे शहर में एक खास चीज थे।

एलीफेस्टन टाकीज़ में मदर इन्डिया खेल आने वाला था जिसकी नोटिसें शहर की हर गलियों के जाबजा मकानों पर चस्पा थीं। अखबार वालों ने पहले से ही धूम मचा रक्खी थी। जिधर देखिये मदरइंडिया खेल का चर्चा हो रहा था। इत्तफाक से शनीचर का दिन था, मदर इंडिया खेल आ ही गया। रमेश और उमेश दोनों दोस्त उसे देखने के लिये गये। उस रोज सिनेमा में लोगों की इस कदर भीड़ थी कि टिकट का मिलना मुश्किल था। खेल ७ बजे शुरू होने वाला था, लेकिन टिकट ६ बजे से ही बन्द हो गया था। रमेश व उमेश दफ्तर से ५ बजे लौटने के साथ ही टिकट ले लिए थे, क्योंकि एलीफेस्टन टाकीज उनके मार्ग में पड़ता था। इसलिये उन दोनों दोस्तों को खेल देखने में अधिक कष्ट न हुआ। ६॥ बजे सिनेमा पहुंचे, टिकट दिखाकर अन्दर गये, खेल आरम्भ हुआ और ९॥ बजे समाप्त हुआ। खेल शोसल था और उन लोगों ने उसे बहुत पसन्द किया और डेरे की राह ली। मकान पर उर्मिला और शान्ति से खेल की तारीफ की। उनको भी देखने को कहा। दूसरे दिन रबिवार था। उस रोज खेल दिन में तीन बार चला। पहला शो ८ बजे से १०॥ बजे तक था, वह औरतों के ही लिये था इसलिये रमेश और उमेश ७ बजे ही इन दोनों औरतों को सिनेमा घर के लिये टिकट कटा कर अन्दर भेज दिये और अपने नौकर को वहां बाहर उनको लाने के लिये छोड़ दिया। ये महिलायें द्वितीय श्रेणी की टिकट लिये हुए थीं। जहां पर यह औरतें बैठीं हुई थी उसी जगह प्यारे लाल साहब वकील की बीबी 'लीला' जिनका परिचय ऊपर आ चुका है, दो बच्चे और एक

दाई के साथ खेल आरम्भ होने के कुछ मिनट पहले आ पहुँची। उस रोज खेल में इस कदर औरतों की भीड़ थी कि एक दूसरे पर लदी हुई थीं। उर्मिला और शान्ति पहले से आई हुई थीं इसलिए यह दोनों औरतें बहुत ही इतमिनान से बैठी हुई थीं। उस भीड़ में कौन पूछता था कि कौन शरीफ घर की औरत है और कौन रजील घर की। जिसने जैसा पैसा चुकाया और पहले आया उसके लिये उतना ही आराम था। उर्मिला और शान्ति लीला को परेशान देख कर और खास कर उन दोनों बच्चों के कारण उनको ज्यादा रहम आया। फौरन लीला की तरफ इसारा किया 'आप यहां तशरीफ लायें और इन बच्चों को हमें दीजिये लीला आती है और साथ बैठती है. दोनों बच्चे लीला, उर्मिला और शान्ति की गोद में बैठ जाते हैं। देखने से मालूम होता है कि इन्हीं दोनों औरतों के बच्चे हैं। न शोर करते न रोते हैं, मालूम होता है कब का परिचय है। इधर उर्मिला, शान्ति और लीला में बातें होती हैं। पहले अपना अपना परिचय बताती हैं। आखिर में साबित होता है कि एक ही पड़ोस की ठहरीं। पहले जान पहिचान न होने के कारण यह अनभिज्ञ थीं। लीला को हद दर्जे की खुशी हुई। और खास कर उर्मिला और शान्ति के शरीफाना बर्ताव पर। खेल १०½ बजे समाप्त हुआ। बाहर यह निकलीं। बकील साहब का कार पहिले से बाहर खड़ा था। लीला, शान्ति और उर्मिला के हाथ पकड़ कर कार में बैठने को कहती हैं। बहूजी आप लोग घबड़ाइये नहीं। मैं आप के मकान पर पहिले पहुँचा कर तब अपने यहां जाऊंगी। यह औरतें कहती हैं आप क्यों तकलीफ उठायेंगी। हम लोग टांगे से चली जायेंगी। देखिए हमारा नौकर आया है किन्तु लीला नहीं मानती है। जबरदस्ती घसीट कर मोटर में ले जाती है। नौकर और दाई कार के पिछले हिस्से में बैठते हैं। ड्राइवर मोटर खोलता है।

मोटर भों भों करता हुआ रवाना होता है। कार उर्मिला और शान्ति के घर के सामने दरवाजा पर खड़ा होता है, दोनों औरतें कार से उतरती हैं, नौकर भी उतरता है। लीला ने चलते समय इन महिलाओं से अपने यहां दूसरे दिन आने को कहा। यह औरतें वादा करती हैं, शान्ति और उर्मिला लीला को नमस्कार करती हैं और वह भी नमस्कार से जबाब देती है। लीला मोटर में बैठ कर अपने मकान पर आती है और अन्दर बच्चों के साथ चली जाती है। इधर शान्ति और उर्मिला अपने अपने मकान के अन्दर जाती हैं और अपने अपने पतिदेव से, लीला से अपनी दोस्ती का परिचय सुनाती हैं।

दूसरे दिन उर्मिला और शान्ति, लीला के घर जाती हैं। लीला बड़े प्रेम से उनका स्वागत करती है और अपने कमरे में ले जाती है। लाला का कमरा खूब सजा हुआ है। कमरे की दीवारों पर जा बजा मशहूर सिनेमा ऐक्ट्रेसों की तस्वीरें टँगी हुई हैं और कहीं कहीं पर कुदरती सीन और सीनरी-पहाड़ों और झरनों की टँगी हुई हैं। कमरे में एक तरफ एक अच्छी खासी नेवाड़ को मुसहरी बिछी हुई है। उसपर एक मोटी तोशक जिस पर एक खुशनुमा कारपेट हरी जमीन की विछी हुई है। कमरे में एक तरफ दो तीन कुर्सियां और एक छोटी टी-मेज पड़ी हुई है। एक तरफ एक बेंच पर हारमोनियम और पयानो रक्खे हुये हैं। कमरे से लगा हुआ जो कमरा है और जो उस कमरे से दुगुना लम्बा और चौड़ा है और जो गोल नुमा बना हुआ है और गोल कमरे के नाम से प्रसिद्ध है उसमें गद्देदार कोच और आराम कुर्सियां विछी हुई हैं। फर्श पर नीले रंग की एक मोटी दरी और उस पर एक मोटी लम्बी पूरे कमरे की कालीन सुर्ख जमीन की विछी हुई है। कमरे के एक तरफ रेडियो की

मशीन लगी हुई है, जिस के देखने से मालूम होता था कि यह कमरा रेडियो सुनने के लिये बना हुआ था। लीला-उर्मिला और शान्ति को इस रेडियो वाले कमरे में ले जाती है और उन को कोच पर बैठने का इशारा करती है और खुद उसके बगल वाले कोच पर बैठ जाती है नौकर आता है, लीला से पूछता है, बहू जी चाय तैयार है। लीला उसको तीन प्याले में लाने के लिये कहती है। नौकर एक गोल हो टेबिल जिसके ऊपरी हिस्से में जयपुरी संग मरमर लगे हुये हैं ला कर रखता है। टी, का पूरा सेट ला कर रखता है। गर्म चाय एक बर्तन में लाता है। तीनों के सामने चाय के प्याले रखता है और तीन तश्तरियों में विस्कुट रखता है और तीनों प्यालों में चाय उडेलता है लीला, उर्मिला और शान्ति को चाय पीने को कहती है। पहले औरतें पीने में दरेग करती हैं, किन्तु लीला के कहने से चाय पीना आरम्भ करती हैं। यह दोनों महिलायें केवल एक एक प्याले ही पर इक्तफा की किन्तु लीला दो तीन प्याली चाय एक बाद दीगरे-साफ कर गई। लीला नौकर को मेज हटाने का इशारा करती है। इशारा करना था कि नौकर मेज को कमरे से हटा देता है। शाम का वक्त था और करीब ७ बज चुका था। उस रोज रेडियो में एक महहूर गाने वाले मिस्टर के० सी० डे० का गाना होने वाला था। अखबार और रेडियो समाचार पत्र में इस का प्रोग्राम पहले से छप चुका था। लीला उर्मिला और शान्ति से कहती है आज बहुत अच्छा मौका है कि आप लोगों की एक प्रसिद्ध गायक (Singer) मिस्टर के० सी० डे० के गाने सुनने का मौका मिला है। मैं ने कल ही इसको रेडियो समाचार पत्र में देखा था, इस लिये आप लोगों को ६ बजे शाम को आने को मदऊ किया था। शायद आप लोग मिस्टर के० सी० डे० के गाने सिनेमा घर में सुन चुकी होंगी लेकिन यहां पर आप लोग खूब

सुनिये। देखिये ७ बज कर ५ मिनट पर गाना शुरू होने वाला है। केवल ५ मिनट की और देरी है। अभी बातें खतम भी नहीं हुई थीं कि इतने में घंटी बजती है। घंटी बजने के साथ साथ मधुर गाने की अलाप सुनाई देती है। वाह वाह की तालियां सुनाई देती हैं। वाकई गाना ला जवाब था। गाना आध घण्टे में समाप्त होता है। उर्मिला और शान्ति कहती हैं कि बहू जी, गाना कितना लाजवाब है। संगीत रत्न भी क्या ही अच्छा रत्न है। चन्द मिनटों में मनुष्य के जीवन को सुखमय और दुखमय बना सकता है। इसपर साइंस के नये नये मालूमात ने गजब ढाया है। आज हम लोग कोसों दूर पर बैठे हुये इन रेडियो के जरिये कलकत्ते, बम्बई जैसे बड़े शहरों के गाने सुनते हैं! यह सब नई सभ्यता का प्रभाव है। लीला कहती है कि बहू जी, आप लोग इतने ही पर आश्चर्य न कीजिये। अभी हाल ही में टेली वीजन (Television) की इजाद हुई है। जिस के द्वारा गाने बजाने या व्याख्यान देते वक्त उस शख्स और वहा की मजलिस का फोटो भी दिखाई देता है। जिसमें स्पीच देने वाले के सब हरकात व सकनात जब जब होते हैं, दिखाई देते हैं। यह सुन कर उर्मिला और शान्ति दांतों तले उंगली दबाती हैं और चुप हो जाती हैं। इतने में नौकर तश्तरी में पान बना कर लाता है। तीनों खाती हैं, उर्मिला और शान्ति उठती हैं, लीला से अपने जाने की इजाजत मांगती हैं। कहती हैं, ८ बजे हैं, वे लोग घूम कर आये होंगे, देरी हो रही है, लीला को नमस्ते करती हैं, और अपने घर को राह लेती हैं। नौकर पहले ही से वकील साहब के दरवाजे पर आ कर बैठा था। उर्मिला और शान्ति उसके साथ मकान को जाती हैं। रमेश और उमेश अभी आ ही रहे थे कि दरवाजा पर मुलाकात होती है कहकहा मचता है। रमेश झट बोलता है, भाई उमेश, आज



हमें लोगों की चांदी है। देखिये आने के साथ ही दो नई बहुयें हाथ लगीं। क्या अच्छी सायत थी। इस पर और कहकहा मचता है। दोनों बहुयें अपने अपने पतिदेव के साथ अपने अपने मकान में जाती हैं। उर्मिला और शान्ति दोनों कपड़े बदलती हैं। इधर रमेश और उमेश भी अपने कपड़े बदलते हैं। आध घण्टा आराम के बाद दोनो खाना खाते हैं और तब यह दोनों बहुयें भी खाना खाती हैं। और अपने बिस्तर पर जाती हैं। सोते समय उर्मिला और शान्ति अपने पति देवों से लीला के यहां क जाने और चाय पानी की दास्तान सुनाती हैं और उस पर हर तरह की बातें होती हैं। इतने में निद्रा देवी का आना होता है और उनको अपनी गोद में सुला देती हैं।

लीला प्रायः अपनी कार रमेश और उमेश बाबू के मकान पर सुबह शाम लाती है। उर्मिला और शान्ति को कभी घूमने, कभी सिनेमा देखने और कभी अजायब घर देखने, कभी किसी बड़े लीडर की स्पीच सुनने को ले जाती है। प्रायः लीला शाम को टाउन क्लब घर टेनिस खेलने जाती है क्योंकि लीला को टेनिस खेल से, कालेज में पढ़ते ही समय से दिलचस्पी थी। इसलिये उसने टाउन क्लब घर में नाम लिखा रक्खा था। वहां पर बड़े अफसरान और बड़े बड़े घरों की औरतें शाम को टेनिस खेलने आती थीं। खेलने के बाद आध घण्टा क्लब में चाय पानी और गप शप में गुजरता था। कभी पोलिटिकल, कभी अखबारी खबरों पर अपने अपने ख्यालात के इजहार होते थे। तब वे महिलायें अपने २ मकान रवाना होती थीं। लीला कभी २ उर्मिला और शान्ति को भी क्लब घर अपने साथ कार में बिठला कर ले जाती थी। वहां नाश्ता पानी साथ करती तब घर पहुँचा देती थी। प्रथम तो उर्मिला और शान्ति क्लब घर जाने

से हिचकिचाती थीं लेकिन लीला की जिद से और उसके यह समझाने से कि वहां पर मनोरंजन के बहुत से सामान हैं। अक्सर रेडियो में गाने सुनने में और बड़े २ लोगों की स्पीचें सुनने में आती हैं। अक्सर मुल्क के सामाजिक और सांस्कृतिक, एवं राजनैतिक हालत पर बहस मुबाहिसा करने और सुनने का अवसर मिलता है जिससे अपने विचारों का विकास होता है। कभी प्यानों पर गाने सुनने का मौका मिलता है और कभी केवल ताश और शतरंज ही पर निर्भर रहना पड़ता है। हर औरतें अपनी इच्छा के अनुसार खेल खेल सकती है। इसमें किसी प्रकार की रुकावट नहीं होती। कभी २ औरतों के भाग के वास्ते जो मुल्क में कहीं न कहीं छिड़ा रहता है उसके पार्टी में पुरजोर रेजूलेशन पास करके भेजा जाता है उसको अखबारों में छापने को दिया जाता है। इस तरह हम लोग कोई न कोई अच्छी खबर रोज सुनते हैं और इस तरह काफी तफरीह रहती है। लीला के कहने सुनने से उर्मिला और शान्ति भी अब प्रायः क्लब घर लीला के साथ जाने लगीं, लेकिन उनका रोजाना का जाना आवश्यक न रहा। जब लीला आकर हद से ज्यादा जिद करती तब यह बहुयें जाने को तैयार हो जाती थीं। कुछ तो उसकी दोस्ती का ख्याल रखना रहता था और कुछ तफरीह के ख्याल से। लेकिन यह ख्यालात हमेशा तक ऐसे ही कायम न रहे। धीरे धीरे एक रोज नागा, दो रोज नागा करके क्लब घर आने जाने लगीं। यहाँ तक कि उर्मिला और शान्ति रोजाना घूमने क्लब घर लीला के साथ जाने लगीं। कहां वे लीला के आने और जिद करने पर तैयार होती थीं, और पतिदेव से आज्ञा लेकर जाती थीं। अब इसकी नौबत न रही, कार आया तुरन्त तैयार हुईं, लीला के साथ घूमने या क्लब घर या सिनेमा देखने या किसी बड़े लीडर की स्पीच सुनने चली जाती थीं।

नौकर को मकान की ताली हवाला कर देती थीं, यह कह कर कि बाबू जी लोगों से कह देना कि—मैं आज दस बजे रात को घूम कर या सिनेमा देख कर आऊँगी। खाना वे लोग होटल से मँगा कर खायेंगे। हम लोग बाहर से खाना खाकर आवेंगी।

बाबू जी लोग जब दफ्तर से आते हैं, अक्सर घर खाली पाते हैं। नौकर अकेला बैठा हुआ उन लोगों की इन्तजारी में रहता है। कपड़े बदन से उतारते हैं, नौकर को खूँटी पर टांगने को देते हैं और आप आराम कुर्सियों या चारपाई पर गिरते हैं। सुध बुध घण्टे आध घटे तक नहीं रहती है। नौकर पंखा करता है, पानी और नाश्ता लाता है तब जाकर वे नाश्ता करते हैं। संयोग बश यदि नौकर कहीं चला गया रहता है—जैसे बहुओं को पहुँचाने या लाने, तब तक इन बाबू जी लोगों को घण्टे दो घण्टे इन्तजारी में दुर्गति उठानी पड़ती थी। प्रथम तो दफ्तर के काम से थके मांदे, दूसरे प्यास की तेजी से उनकी हालत और बुरी हो जाती थी। था कोई उस समय उन लोगों के जीवन का सहारा तो यह वफादार नौकर मेघूराम नहीं तो इन लोगों की और भी दुर्गति होती। रमेश और उमेश ने बहुतेरा इन बहुओं को समझाने बुझाने की चेष्टा की किन्तु किसी की हिकमत अमली काम न कर सकी। हाँ कुछ दिन के बाद एक रोज शान्ति और उर्मिला लीला के साथ महिला विद्यालय में नारीपति धर्म पर लेक्चर सुनने गई थीं। स्पीच बहुत ला जबाब थी। जिसने स्पीच दी थी वह महाराष्ट्र देश की एक विधवा महिला थी। महाराष्ट्री भाषा के अतिरिक्त उसे नागरी भाषा में भी पूरा कमाल हासिल था जिसका यह प्रभाव हुआ कि घर लौटने पर शान्ति के ख्यालात में एक प्रकार का परिवर्तन होने लगा।

धीरे धीरे उसने क्लब घर जाना छोड़ दिया। लीला की सुसाइटी में कम जाने लगी। कहने पर भी इधर उधर की जरूरी काम दिखा कर टाल देती थी। हां कभी किसी बड़े आदमी की स्पीच सुनने या कोई खास धार्मिक खेल सिनेमा में आती थी तो वह भी बगैर अपने पति देव उमेश की आज्ञा के नहीं देखने जाती थी। लेकिन उर्मिला के ख्याल में जरा भी तबदीली नहीं हुई। वह रोजाना क्लबघर प्रायः सिनेमा अकेले या कभी लीला के साथ जाया करती। आने पर उल्टे रमेश को फटकार सुनाया करती "आज रुपया न होने की वजह से मैं सिनेमा घर नहीं गई, केवल रेडियो सुनकर चली आई। आज फलां कम्पनी आई है जिसमें गाना और नाच का खास प्रबन्ध था केवल हमारे पास रेशमी की जरीं साड़ियां न होने के कारण मैं लीला के साथ फर्स्ट क्लास में नहीं बैठी जिस के टिकट केवल ५) ही थे। और २) के टिकट पर सेकण्ड क्लास में बैठी।" रमेश कुछ जबाब न देता था, हँस कर टाल देता था। कभी आजिज आकर कहता था कि मुझे सुबह शाम दो पैसे का नाश्ता करने को नहीं मिलता है क्या तुम्हारे लिये इतना नाकाफी है? उम्दा से उम्दा खाना और नाश्ता करती हो। तुम देखती हो मैं अपनी पुरानी राग में ही मस्त पड़ा रहता हूं। तुम देखती हो शायद ही मुझे चार छः महीने पर सिनेमा देखने का मौका मिलता है। हां साल भर पूर्व मेरी यह हालत रही कि मैं तुम्हारे लिये प्रायः सिनेमा देखने और तुम्हें दिखाने जाया करता था, लेकिन मेरी वह न तबियत रही और न वह अरमान तुझे क्या मालूम रुपया कहां से आता है? कर्ज लेते लेते मेरा नाकोंदम आ गया, जिधर जाता हूँ तकाजा पर तकाजा होते रहते हैं। दफ्तर के बाबू लोगों का उधार अलग ही रहता है। बाजार में जब कभी गये, दूकानदारों का तकाजा अलग सुनता हूँ। यहां तक कि कभी कभी

फटकार की भी नौबत आ जाती है। क्या करूँ। इसी दिन के लिए मुझे जीना था, अभी एक महीना होता है, पचीस पचीस रुपया की दो रेशमी बनारसी साड़ियां तुम्हारे लिए सेठ टोडर मल मारवाड़ी की दूकान से लाया हूँ जिसका अभी एक अधेले तक नहीं चुकाया है केवल ५ दिन के वादे पर लाया था किन्तु क्या करूँ घर के खर्चे से फुरसत ही नहीं, वह पचास रुपया कहां से चुकाऊँ? मेरा उस तरफ मुँह दिखाना कठिन हो गया है। जिन दूकानों से मैं सैकड़ों रुपये का माल लाता था, प्रथम तो उधार लेता ही न था और यदि कोई चीज पसन्द आगई और उधार ले लिया तो उसके दूसरे रोज ही उसकी दूकान पर दाम चुका देता था जिसका यह असर था कि अब भी लोग मेरे पहले के उसूल और बरताव के आधार पर उधार देते चले जाते हैं। तुम्हें मालूम है, तीन महीने के करीब होता है, नरायन दास जेवर फरोश की दूकान से तुम्हारे नई डिजाइन के बर्सलेट और नेकलेस और पेरिस सेफ्टी पेन जो खरीद कर लाया था और १००) उसके बाकी रहे थे जो दूसरे माह की दूसरी तारीख तक चुकाने को कहा था, आज तीन तीन माह का जमाना गुजरता है, मैं नही दे सका। उस तरफ मेरा मुँह दिखाना दूभर हो गया है। हाय जिस बाजार में जरा सी जबान हिला देने पर सैकड़ों रुपये के सामान उधार मिल सकते थे आज उधर आजादी के साथ घूमने में शर्म आती है। मुँह इधर उधर छिपाये फिरता हूँ। उफ! ऐसी जिन्दगी। क्या अब भी उर्मिला तुम्हारी इच्छायें पूरी नहीं होती? लेकिन उर्मिला को इन बातों से क्या गरज, उसको अच्छे अच्छे खाने, अच्छे अच्छे पहिनने के कपड़े, सिनेमा, थियेटर देखने को रुपया चाहिये। कुछ भी ध्यान नहीं देती थीं। रमेश की हालत दिन ब दिन खराब होती जाती थी। स्वास्थ्य पहिले ही से जवाब दे

चुका था। भर पेट सुख का दाना नहीं मिलता था। दफ्तर की पिसाई अलग थी। घर की कुफ्त अलग थी। सिवाय आंसू बहाने के और कोई सूरत न थी। चेहरा दिन व दिन पीला पड़ता गया। मालूम होता था कोई खतरनाक मर्ज हो गया है। धीरे धीरे रमेश को पेचिस की बीमारी हो गई। बदन के गोश्त घुल घुल कर सूख गए, केवल हड्डियां दिखाई देती थीं। जब तक रमेश में उठने बैठने की ताक़त थी खुद जाकर पेशाब व पाखाना कर आता था लेकिन धीरे धीरे हालत गिरती गई और खाट की नौबत आ गई। पेशाब व पाखाना अब खाट ही पर होने लगा। नौकर बेचारे से जहां तक हो सकता था धोता पोछता, बीबी उस कमरे में आती तक न थी, दूर से ही दवा मंगाकर दिला देती थी, हाल तक पूछती न थी। जब कभी बदन में हद दर्जे का दर्द शुरू हो जाता था और वह चारपाई पर इधर उधर करवटें बदल कर रोने और चिल्लाने लगता था तब उर्मिला डाट सुनाती, "चुप क्यों न रहते ?" मुझे परेशान कर रक्खा है, मेरी जिन्दगी नाकों आ गई है।" कभी वह यह कहते हुये लीला के घर और कभी क्लब घर या सिनेमा घर चली जाती थी और जरा भी सोचती न थी कि रमेश की क्या हालत होगी ? रमेश जब बहुत घबड़ा जाता तो उमेश को नौकर से बुलाता। उमेश उनकी हालत देख रो पड़ते, तसल्ली देते, शान्ति को उसके पास दिन में बैठने को कह जाते। डाक्टर के पास जाते, बुला आते और दिखाते। इस तरह छः महीने के बाद रमेश इस लायक हुए कि वह सवारी से दफ्तर जा सकें। पेट एक ऐसा अधम है कि जिसके लिये इन्सान क्या से क्या नही करता ! दफ्तर जाते, किसी न किसी तरह काम करते, वापस आते। रमेश को रह रह कर अपने पहले बार के बीमार होने के खयाल आ जाते थे। सोचते थे, बीबी ने उस समय किस बहादुरी के साथ दिन रात उसकी

खिदमत की थी। आज यह हालत हो गई है कि मुझे देखने और हाल पूछने तक को नहीं आती है। इसमें उसका जरा भी कसूर न ठहरा। वह एक उदार चित्त की पहले भी थी और अब भी है, किन्तु उसकी तमाम आदतों को मैं ही बिगाड़ने वाला हूँ। यदि मै उसे रोज सिनेमा घर, मजलिस आम में खुले मुंह उठने बैठने और बातचीत करने, जाने नहीं देता तो यह नौबत मुझे आज देखने में न आती। इस पर रमेश को सन्त तुलसीदास का एक पद याद आ गया :—

"शूद्र, गंवार, ढोल, पशु नारी। यह सब ताड़न के अधिकारी॥"

लेकिन अब चारा ही क्या था। इस तरह करके साल दो साल तक और चलता रहा। रमेश १००) में क्या कर सकता था ? इसके बीच जहां तक हो सका, रमेश ने उर्मिला के सुधारने के लिए हर तरह की कोशिशें कीं। किन्तु सब बेकार हुई। उसके अखराजात और रहन सहन में बजाय कमी के अधिक स्वतंत्रता आती गई। और रमेश की हालत दिन ब दिन उससे भी खराब होती गई। बाजार व दफ्तर किसी जगह उसकी इज्जत बाकी न रह गई। दिन ब दिन पब्लिक की नजरों से गिरता गया। जिधर देखिये हर तरफ से उसकी तरफ अंगुश्तनुमाई होने लगी। इस ख्याल से नहीं कि वह एक लायक इज्जतदार शख्स ठहरा बल्कि इस वजह से कि यही वह रमेश है जिसकी पहले कैसी आदर्श जिन्दगी थी। लेकिन बीबी की वजह से उसकी क्या हालत हो गई।

एक रोज अचानक नरायन दास (जेवर फरोश) शर्राफ की दुकान से गुजर रहा था कि सेठ जी के मुनीम की नजर एक बारगी रमेश पर पड़ी। वह फौरन उठा, रमेश को पुकार कर कहा—यहां आओ। रमेश यह आवाज सुनकर खड़ा हो गया

और दुकान पर चढ़ आया। उसका चेहरा देखते ही सेठ जी ने झुंझलाकर बड़ी बेमुरव्वती के साथ कहा—कहो रमेश तुम आज तक कहाँ थे? कई बार मुनीम जी और नौकरों को मैंने आप के पास भेजा किन्तु पता नहीं लगता था। मालूम होता था कि कभी दफ्तर गये हो, कभी घूमने और कभी किसी और जगह। खैर बताओ इस हीला हवाला से कब तक काम चलेगा? आज बरसों का जमाना गुजरता है। एक मुश्त सौ के सौ बाकी हैं। आखिर हम लोग भी दुकानदार ठहरे। किसी के घर में रुपया का खजाना तो नहीं भरा है कि जब चाहे निकाल लें। यदि तुम्हारे जैसे दस बारह और हमारे ग्राहक मिल जांय तो हमारा और हमारी दुकान दोनों का दिवाला निकल जाय। अब तुमसे अधिक बातचीत नहीं करना चाहता हूं। तुम मेरा रुपया अदा करते हो या हवालात जाना पसन्द करते हो। मैं कल ही तुम्हारे ऊपर दावा करने जा रहा था कि एक जरूरी काम आ जाने की वजह से रुक गया किन्तु मैं आज जरूर इसका दावा कर दूँगा। और तुम्हारी जो दुर्गति होगी इस जगह बनाकर छोड़ूंगा। बेईमान! तू शरीफ की पोशाक में सेठ महाजनों को धोका देना चाहता है। और शरीफ लोगों की तरफ बदख्याली का गुमान जमाना चाहता है? अगर तुम बेइमान हो, तो हम लोग तुमसे भी ज्यादा बेइमान हैं। तुम्हारी इसी जगह हजामत बनाता हूं और इसके बाद एक का दो न वसूल किया तो नरायन दास सेठ क्या? हम लोग अपने बाप का भी नहीं हो सकते, तुम तो एक गैर, बेशर्म, बेहया, बेइमान ठहरा। रमेश ने सेठ जी से कहा खफा न होइये। आप को मेरी हालत मालूम नहीं, सालों से बीमार हूं। आज यह पहला दिन है जो बाजार देखने की नौबत आई और मेरी यह हालत बनी। तकदीर का खेल है, इसमें आप का कोई कसूर न ठहरा। यह सुनकर सेठ जी और गरजकर

बोलने और फटकारने लगे, इस बेइमान का मुह देख लो, यह उलटे मुझे कसूरवार ठहराता है मैं कोई बात सुनना नहीं चाहता हूँ तुम अभी मेरा रुपया चुका दो वरना मैं सरे बाजार तुम्हारी मूँछ उखड़वा लूँगा यह सुन कर रमेश बोला सेठ जी, यह क्या व्यर्थ बक रहे हैं मैंने आप को कभी कसूरवार नहीं ठहराया मैं तो अपनी भाग्य और अपना अपराधी ठहराया हूं। यह सुन कर वह रोने लगा लोगों की भीड़ आनन फानन में दुकान के चारों तरफ हो गई। लोग एक दूसरे से पूछने लगे क्या बात है क्या यह चोरी करके भागा है। सेठ जी क्या माजरा है। सेठ जी ने कहा, है तो यह चोर ही लेकिन कहने को शाह बनता है। यह करीब दो साल के होता है हमारी दूकान से ढाई सौ के जेवरात ले गया, जिसमें डेढ़ सौ रुपया उस समय चुका दिया था, सौ बाकी छोड़ा और पन्द्रह रोज के अन्दर चुकाने को कह गया था। आज दो साल का जमाना गुजरा है, अपना मुँह तक इधर नहीं दिखाया। जब कभी मैं अपने मुनीब या नौकर को इसके घर भेजता हूँ तो यह नौकर से अन्दर से यह कहला भेजता है कि बाबू जी दफ्तर गये हैं, घूमने गये हैं। इस तरह बहाना करके भागता फिरता है आज इत्तफाक बश मुनीम जी की नजर इस बेईमान पर पड़ गई जो उस तरफ से गुजर रहा था। बुलाने पर किसी तरह से दूकान पर आया है। इस पर हमको अपराधी भी ठहरा रहा हैं मैं नही जानता था कि यह इतना धोखेबाज और बेईमान है। मैंने इसके पहले के बर्त्ताव पर सौ रुपये का उधार दे दिया था। इसी से पूछिए, आप लोग जब यह अपनी शादी में आठ सौ रुपया के आभूषण हमारे दूकान से ले गया था उस समय दो सौ रुपये की कमी पड़ी थी मैने लाख कहा कि तुम जेवर ले जाओ मैं तुम्हें और तुम्हारे दफ्तर को जानता हूँ लेकिन यह नही ले गया और जब दूसरे

रोज सुबह को तीन सौ रुपया लेकर आया तो बाकी जेवर हमारी दूकान से ले गया अब समझ में नहीं आता कि ऐसा बेईमान क्यों हो गया है। रमेश ने भी दूसरे दूसरे लोगों से कहा कि मैंने सेठ जी को कुछ नहीं कहा महज अपनी असमर्थता प्रगट किया। मैं सालों तक बीमार रहा हूँ अपने ही दवा दारू में परेशान रहा हूं। आज यह मेरा पहला मौका है जो इस बाजार में आया हूँ और यह नौबत उठानी पड़ी है मैं कसम खाता हूँ कि एक हफ्ता के अन्दर कोई न कोई बन्दोबस्त करके सेठ जी का रुपया जरूर चुका दूंगा। तब मैं इस बाजार की तरफ कदम रक्खूंगा दूकान पर कुछ शरीफ लोग भी बैठे थे कुछ भीड़ में मौजूद थे। उन्होंने कहा जब यह खुद एकरार कर रहे है कि एक हफ्ता में रुपया चुका दूंगा तो एक हफ्ता और देख लीजिए, सेठ जी। आप खुद ही इस बात को बता रहे हैं कि इसके पहले, यह कितने सच्चे अपने वादा के पाबन्द थे, क्या करें उनकी भी मजबूरियां मालूम हो रही है। आखिर बीमार थे कहां से लाते खुद ही दवा में तबाह रहे होंगे। जिस तरह दो साल गुजरा, उसी तरह एक हफ्ता और सही। आप का रुपया तो मारा नहीं जाता महज दावा दरपन में परेशानी उठानी पड़ेगी। उन लोगों के कहने पर सेठ जी चुप हुए और रमेश को जाने दिए। रमेश दूकान से सीधा उठा मुँह रुमाल से छिपाये गली देता हुआ, ताकि उसे कोई पहचान न ले मकान की राह लिया दरवाजा के सामने आकर जीभर कर रोया, आंखे पोछ कर दरवाजा खटखटाया मेघूराम को पुकारा मेघूराम आया दरवाजा खोला अन्दर गया। कपड़े उतारे चारपाई पर पड़ा और नौकर से कहा आज खाना नही खाऊँगा, तबियत ठीक नही हैं सोरहा हूं जगाना मत, जैसे पड़े वैसे पड़े के पड़े रह गये। उर्मिला उस रोज सिनेमा देखने गई थी। सिनेमा देखकर साढ़े दस बजे रात में बाहर ही खा पी कर

मकान वापस आई नौकर को आवाज दी नौकर दरवाजा खोला। ऊपर गई नौकर से पूछा बाबू जी कहां हैं उसने कहा वह अपने कमरा में बाजार से आकर स रहे हैं और जगाने को मना किए हैं, कुछ तबियत खराब है उर्मिला अपना कमरा खोली नौकर से बिस्तर मँगाई और पानी रखने को कही। नौकर ने बिस्तर लगाया, पानी लाकर रक्खा उर्मिला कुछ नाश्ता कर के बिस्तर पर जाती है और सो जाती है और कहीं सुबह ७ बजे अङ्गड़ाई लेती हैं। रमेश बगैर खाये पीए रात भर पड़ा रहा न उर्मिला उसे खाने को पूछी न नाश्ता पानी ही को, यहां तक की उसकी हालत भी दरयाफ्त न की कि कैसी है। क्यों सुस्त व दुखी पड़ा है सुबह नौकर पानी गुसुलखाना में रखता है। बहू को सूचित करता हैं, बहू पैखाने जाती हैं और वहीं से गुसुलखाना में मुँह हाथ धोकर आती हैं, नौकर नाश्ता पानी कमरा में लाता है और वह नाश्ता करती हैं रमेश अपनी पुरानी वजा से उठता है। पानी खुद ले कर पाखाना जाता है। वापस आता है मुँह हाथ धोता है कुछ नाश्ता करता है। इतने में साढ़े आठ बजते हैं स्नान करने जाता है वहां से आकर कुछ खाता है और दफ्तर की तैयारी करने लगता है तब साढ़े नौ बजे दफ्तर को रवाना होता है वहां भी वह फिक्रमंद नजर आता है। किसी काम के करने में तबियत नही लगती है। उदास बैठा हुआ जो सामने आता है उसे किये जा रहा है, दफ्तर के लोग उससे पूछते हैं कि यह तुम्हारी कैसी हालत दिन ब दिन हो रही है। क्यों इस तरह मुतफिक्र नजर आते हो। लेकिन कुछ जावाब नही देता है बहुत जिद करने पर कहता है कि रात सिनेमा देखने चला गया था, सिनेमा से आनें पर नींद उचट गई, फिर रात भर नीद नहीं आई, तबियत कुछ भारी हो गई है, इस वजह, से उदास नजर आता हूँ। और कोई बात नहीं है।

दफ्तर में रमेश बाबू का पोस्टल प्रावीडेन्ट फन्ड कटता था। जो जमा होकर अब तक आठ सौ ८००) रु० के हो गये थे, रमेश ने बड़े बाबू से पूछ कर प्रावीडेण्ट फण्ड से ५००) कर्ज लेने की दरख्वास्त दी। कागजात की कारवाई तीन, चार दिन के अन्दर खतम हो गई। रमेश को ५००) कर्ज प्रावीडेन्ट फन्ड से मिल गया। सबसे पहला काम जो उसने किया वह यह था कि १५०) रुपया जो उसने उमेश से कर्ज लिया था उसे मकान आने के साथ उमेश को चुका दिया। जब वह सूद देने लगा तो उमेश ने कहा क्या दोस्त यही होगा। मैं तुझ से रसीद लिखाने भी नहीं जा रहा था तुमने जबरदस्ती लिख कर घर में दे दिया था। मुझे बाद में यह किस्सा मालूम हुआ। देखो मैंने उस रसीद को उसी दिन फाड़ दिया था। शान्ति को बुला कर उस फटे हुये सरखत को लाने को कहता है। शान्ति लाती है और रमेश उसे दिखाता है। फिर रमेश उठ कर कहता है कि मैं यह १५० रु० भी तुमसे न लूंगा। मैंने तुझे मित्रता के तौर पर दिया था और मुसीबत में दिया था, जब सुखी हो जाना लौटा देना। लेकिन रमेश किसी तरह नहीं माना और हाथ जोड़ कर कहता है कि तुमने मेरी बड़ी इज्जत रक्खी थी और मेरे बड़े गाढ़े वक्त काम आये हो मैं इसे जरूर दूँगा। और आप को जरूर लेना पड़ेगा। खैर रमेश रुपया ले लिया, रमेश तब बाजार की तरफ गया। सेठ नरायन दास की दूकान पर जाता है। सेठ नरायन दास उसके चेहरे से भाप जाते हैं, कि वह रुपया लेकर आया है बड़े तपाक से मिलते हैं। बैठने को कहते ही वह दूकान में बैठ जाता है रुपया निकालता है और सेठ जी से बही निकालने को कहता है। और कहता है सेठ जी देखिये सूद व असल लिये कितने आते हैं। सेठ जी बही के वरक उलट कर खाते में उसका नाम देखते हैं। ५ मिन्ट इधर उधर

ज़ोड़ जाड़ कर कहते हैं कि १५०) रु० हुये जिन में १००) रु० नकद और ५०) रु० सूद दो साल के हुये रमेश १५०) रुपया निकाल कर सेठ जी के सामने रखता है और बही में अपने नाम के सामने भरपाई करने को कहता है। सेठ जी मुनीम से कहते हैं कि रमेश के नाम के सामने खाता में आज की मितो में उनकी भरपाई लिख दीजिए। रमेश दूकान से उठता है सेठ जी को अन्तिम नमस्कार करता है और सेठ टौडरमल की दूकान की तरफ बढ़ता है। दूकान पर जाता है, सेठ जी उसकी तरफ मुखातिब होकर कहते हैं कहो रमेश इतनी मुद्दत तक कहां पर थे। अच्छे तो थे। रमेश बोलता है—सेठ जी हमारी तबियत सालों से खराब थी। अभी एक हफ्ते हुआ है, मैं इस बाजार की तरफ कदम रक्खा। आप तो अच्छी तरह हैं। सेठ जी बोलते हैं, हां। तब रमेश सेठ जी से कहता है, सेठ जी बताइये आप के इस समय तक सूद और असल लिये कुल कितने रुपये हुए। सेठ जी ने कहा—महज ५० रुपये असल हुए। सूद कौन मांगता है। आप हमारे पुराने ग्राहक ठहरे। मैं कभी आप से सूद लूंगा। रमेश ५० रुपये जेब से निकाल कर सेठ जी को प्रदान किया। और कहा सेठ जी यह हमारी आप से आखिरी नमस्कार जानिये, सेठ जी यह सुन कर पूछते हैं। रमेश तुम यह क्या कह रहे हो। तुम्हें क्या हो गया है। अगर तुम किसी परीशानी में हो तो यह ५० रुपये तुम ले जाओ। जब तुमको इत्मीनान हो जाय तब ला कर देना। लेकिन रमेश कहता है, सेठ जी आप ने मेरे साथ बड़ी शराफत बर्ती। इतना रोज तक उधार रहते हुए भी किस हमदर्दी से पेश आए। मैं तो उसे कभी भूल नहीं सकता। सेठ जी बोले मैंने कोई बड़ी बात तुम्हारे साथ नहीं की। यह इन्सानी तकाजा है। हर एक सख्त पर दुःख सुख पड़ता है। सबके पास हर समय रुपया नहीं रहता।

बड़े से बड़े लोग मुखटित हो जाते हैं। यह तो ५० रुपया की बात ठहरी, अगर दो-चार सौ रुपया होते, तो भी मैं कभी घबड़ाने वाला नहीं हूं। रमेश, मैं उन सेठों में से नहीं हूं जो रुपया को जान के बराबर समझते हैं। बल्कि मैं आदमी को पहचान कर बात करता हूँ और रुपया को मिट्टी समझता हूँ। रमेश सेठ टोडरमल को नमस्कार कर अपने मकान का रास्ता लेता है।

उर्मिला आज रोजाना से ज्यादा खुश दिखाई देती है रमेश जब बाजार से लौट कर आये तो उर्मिला को मकान पर पाया। आज वह क्लब घर नहीं गई है। उसके बजाय वह भिन्न भिन्न प्रकार के भोजन बनाने में लगी हुई है। रमेश आंगन में आकर खड़े हुये हैं। उसको देखते ही वह भोजन भण्डार से निकलती है। खुद अपने हाथों से पानी लेकर उसके पैर धोती है और नौकर को कुर्सी लाने का इशारा करती है। नौकर कुर्सी लाता है और रमेश को बैठने को कहती है, खुद भोजन भण्डार में जाकर वहां से जो जो चीजें तैयार किये हैं मिठाई, बारा, तरातर सोहन हलुआ पकौड़ी कचौड़ी एक तश्तरी में लाकर रमेश के सामने रखती है। नौकर पानी गिलास में लाकर रखता है। उर्मिला रमेश से नाश्ता करने को कहती है और पखा लेकर सामने स्टूल पर बैठ कर पंखा करती है। रमेश जरा नाश्ता करता है चित्त उसका उदास है। चेहरा देखने से जाहिर होता था। गोकि वह अपने भेद को किसी पर जाहिर नहीं करता है। उर्मिला उसके चेहरे की तरफ देखती है। बार बार पूछती है आप उदास क्यों हैं। आप को क्या हो गया है? रमेश कहता है मुझे कुछ नहीं हुआ है। आज मुझे दफ्तर में टाइप का ज्यादा काम करना पड़ा है। ज्यादा काम होने की वजह से कमजोरी सी मालूम पड़ती है सुस्ती

आ गई है, यही वजह ठहरी वरना और कोई बात नही है। मैं यह बात कहने से भूल गया था। रमेश जिस समय दफ्तर से मकान आया था। उस वक्त उर्मिला को सवा सौ रुपया देकर बाजार चला गया था। उर्मिला उस समय पूछी थी यह सवा सौ रुपया आप कहां से लाये हैं उन्होंने कहा यह मेरा रुपया है मैं उसे बैंक में जमा कर रक्खा था। जब मैं देखा कि घर का काम नहीं चल सकता तो इसे निकाल लाया हूँ तुमने कई रोज से पच्चास रुपया के लिये मेरा जान आजिज कर रक्खी थी इसलिए मैंने यह सोचा कि मैं सवा सौ रुपया तुम्हें देकर कुछ दिन के लिए अपने को निश्चिंत कर लू और तुम जिस तरह चाहो वैसे खर्च करना। यह बातें करके वह सेठ नरायन दास व सेठ टोडरमल के कर्जा देने बाजार चला गया था। समझ में नहीं आता आज उर्मिला इन रुपयों की खुशी में रमेश की इस कदर खिदमत किया शायद उसे अपना कर्त्तव्य याद आ गया था। बात असलियत की जो हो। कहां उर्मिला रमेश के दफ्तर आने पर नाश्ता पानी बाजार से मंगाकर खिलाने की जहमत बर्दाश्त नहीं कर सकती थी, लाख काम का हर्ज क्यों न हो वह क्लब घर, सिनेमा घर, जरूर जाती थी, आज वह इतने बड़े काम को मुलतवी रख कर, वह भी अपने हाथों से रमेश के लिये नाश्ता व खाना तैयार की थी और खुद उसे खिलाने बैठी है आज वह पतिदेव की पहले की तरह आवभगत करती है और नाश्ता पानी कराती है। इन सब बातों ने रमेश पर जरा भी असर नहीं किया। वह अपनी धुन में मस्त पड़ा रहा। रमेश के छूटे नाश्तों से उर्मिला खुद बड़े चाव से नाश्ता करती है। इसके पूर्व उसके बचे हुए नाश्ता को नौकर को या कहीं इधर उधर फेंक देती थी। खुद नहीं नाश्ता करती थी कि कहीं जूठा खाने से उसको बीमारी न हो जाय। एक आध घण्टा इधर उधर की बातचीत और गप शप के बाद उर्मिला,

रमेश से खाना खाने को कहती है। रमेश उर्मिला से हाथ जोड़ता है और कहता है क्षमा करना उर्मिला तुमने नाश्ता ही इतना करा दिया कि मुझे खाना खाने की इच्छा नहीं है। यदि खाया तो बीमार पड़ जाऊँगा, किन्तु उर्मिला की जिद से और उसके हाथ से एक आध कवर रमेश ने भोजन किया। बाकी बचा हुआ खाना उर्मिला स्वयं खाती है। और बाद में नौकर को खाने को देती है। नौकर ने खाना खाया। सब लोग सोने जाते हैं। आज उर्मिला रमेश की चारपाई को अपने कमरे में अपनी चारपाई के पास बिछवाती है। रमेश को सोने को कहती है। रमेश उर्मिला से कहता है कि तुम जाकर चारपाई पर सोओ। मुझे दो तीन खत लिखने को हैं। एक मकान पर माता जी के पास, दूसरा एक हमारे मित्र हैं, जिसका खत एक महीना होता हैं, आया मेरी बीमारी का हाल सुनकर लिखा था, उसका जबा नहीं दिया है। सोचा है कि आज उसका जवाब लिखकर कल की डाक से भेज दू। इस तरह कह कर रमेश ने उर्मिला से अपना पिन्ड छुड़ाया। उर्मिला चारपाई पर पड़ गई और सोने के आध घंटा बाद उसने खर्राटे भरना शुरू किया। चूंकि वह दिन भर की थकी मांदी थी, वह भी आज स्वयं भोजन भण्डार में कई तरह के भोजन तैयार करने में लगी हुई थी जिसके कारण उसे काफी मिहनत करनी पड़ी थी वास्तव में उर्मिला भोजन बनाने में पूर्ण अभ्यस्त थी। यदि वह खाना दिल से बनावे तो बड़े से बड़े घर की औरतें नहीं बना सकती थीं। आज यही बात थी।

रमेश कमरे में मेज के सामने कुर्सी पर बैठ कर खत लिखना शुरु किया। पहला खत उसने अपनी माता को लिखो जिसमें यह लिखा था। माता जी, क्षमा करना, मैंने तुम्हरी

कुछ भी सेवा नहीं की मुझे याद है और सदैव याद रहेगा कि तुमने किन किन तकलीफों और आपत्तियों में कितने परिश्रम से मेरा पालन किया। मैंने जरा भी उसका हक अदा नहीं किया। यह मेरे अन्तिम शब्द हैं। शायद तुम्हे मुझसे मुलाकात न हो सके। एक बात के लिये मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। खत पाने के साथ जल्द से जल्द तुम खुद या किसी को लखनऊ भेज देना। तुम आकर इन्हें (उर्मिला को) मकान पर ले जाना। उन को किसी प्रकार की तकलीफ न देना। उनका कोई कसूर नहीं है, सब कसूर मेरा है। अब मैं इस संसार में गृहस्थ जीवन व्यतीत नहीं करना चाहता हूँ। यदि उनकी इच्छा हो तो उन्हें उनके मैके में भेज देना। यही एक बात कहनी थी। क्षमा करना।

तुम्हारा नालायक लड़का:—रमेश।

दूसरा पत्र उसने उमेश को लिखा--मित्र! यह मेरी आपकी अन्तिम दफ्तर और घरके नाते से बात है। मुझे तुम्हारी तमाम नेकियां याद हैं। मैं जीवन पर्यन्त उन्हें नहीं भूल सकता हूं। मैं अपने जीवन से तंग आ गया था। इससे छुटकारा पाने के लिए मैं तरह तरह से सोच रहा था। अन्त में यही निश्चय किया कि किसी रमणीक स्थान में जाकर एकान्त जीवन व्यतीत करूँ। तुम्हारे ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी का बोझ छोड़ कर जा रहा हूँ। उसे तुम अपनी अमानत समझना। जब तक कोई मकान से न आवे, उर्मिला को अपने यहां रखना, तब उसे हमारे घर भेज देना। भूलना मत। मैंने अपने प्रावीडेन्ट फण्ड से ५००) कर्ज लेकर सबका उधार चुका दिया है। अब किसी के बाकी नहीं रह गये हैं जिसमें से १२५) उर्मिला के पास छोड़ दिया है। उसमें से लेकर काम चलाना। किसी प्रकार का कष्ट

उर्मिला को न होने पावे। अब भी मेरे प्रावीडेन्ट फण्ड के एकाउन्ट में ३००) बाकी हैं। उसके निकालने में पूर्ण परिश्रम करना और शीघ्र निकाल कर माता जी या उर्मिला में से किसी को दे देना। यह मेरी नौकरी के इस्तीफा की दरखवास्त है। इसे दफ्तर में दे देना। दरखवास्त का मजबून यह है:—"मैं अब नौकरी नहीं करना चाहता हूं। अब से एकान्त बास का जीवन बिताना चाहता हूं। यदि मेरे जिम्मे कोई सरकारी रकम का हिसाब हो तो वह मेरे वेतन से पूरा कर लिया जावे। मेरा वेतन और प्रावीडेन्ट फण्ड उमेश बाबू द्वारा मेरी पत्नी या माता को शीघ्र दिया जावे। दफ्तर के बाबू लोगों को मेरा अन्तिम नमस्कार है"।

आप का प्यारा मित्रः—रमेश चन्द्र

तीसरा खत जो रमेश ने लिखा वह उर्मिला के लिए था। उसमें इस तरह लिखाः--"प्रिय उर्मिला प्रसन्न रहो। यह मेरा अन्तिम शब्द समझो या मेरी अन्तिम मुलाकात समझो। मैं तुमसे सदा के लिए बिदा हो रहा हूँ। तुम इससे यह न समझना कि मैं कही जाकर आत्म हत्या कर लूंगा। बल्कि मैं इस संसार में अभी जीवित रहूंगा। मैं अपने इस जीवन से तंग आ गया था। बहुत दिनों से सोचता था कि किस प्रकार छुटकारा पाऊं। अन्त में अचानक मुझे एक तरकीब सूझ गई। अब मैं गृहस्थ जीवन त्याग करके एकान्त जीवन व्यतीत करना चाहता हूं। इसलिए मैं तुम्हे छोड़ कर जा रहा हूँ। मैं तुमसे जरा भी रंज व खफा नही हूं। मेरी तबियत कुछ ऐसी हो गई जिसके कारण यह काम मैंने किया है। मैंने तुम्हारे साथ बहुत जुल्म किया। क्या करूं, दिल को रोकता हूं, रुकता नहीं। माया एक बड़ी जाल है किन्तु लाचार होकर उसे तोड़ता हूँ।

तुमसे एक बात यह कहता हूं कि जहाँ तक हो सके भाई बहिनों की सेवा करना, इसी में तुम्हे सुख मिलेगा। मैंने माता जी को आज ही डाक से पत्र भेज दिया है। वह शीघ्र स्वयं या किसी दूसरे को भेज कर तुम्हे बुला लेंगी। उनकी किसी बात का जबाब न देना। यह जो सवा सौ रुपया तुम्हे रखने को दिया है, इसमें से १००) अपने खर्चे में लाना और २५) मेघूराम को पुरस्कार स्वरूप दे देना। उसने मेरी बड़ी सेवा की है। दफ्तर से मेरा वेतन और प्रावीडेन्ट फन्ड का रुपया मिलेगा उसे माता जी को दे देना, और उनसे लेकर जब जी चाहे खर्चा करना। यह जो दूसरा खत है उमेश को दे देना साथ साथ मेरी इस्तीफा की दरखवास्त भी है उसे भी दे देना तुम घबराना मत। उमेश को हर तरह लिख दिया है कल नहीं तो परसों माता जी या कोई दूसरा अवश्य घर से आयेगा। तुम उनके साथ चली जाना यदि इच्छा करे तो तुम अपने मैके चली जाना, लेकिन याद रखना तुम वहां अधिक दिन न रहना, यही घर तुम्हारा असल घर है। दुख सुख तकलीफ तुम्हें इसी घर में सहना होगा, इसमें तुम्हारी बदनामी नहीं है। मेरी तलाश की कोशिश न करना, मैं ऐसी जगह जा रहा हूं कि तलाश करने पर भी नहीं मिल सकता, यह मेरे आखिरी शब्द तुम्हारे लिये हैं ईश्वर भजन करती रहना, और पवित्र जीवन व्यतीत करना, इसी में मेरी आत्मा को शान्ति होगी।

तुम्हारा नालायक प्रीतम—रमेशचन्द्र

तीन पत्र लिख कर दोनों मेज पर पेपरवेट से दबा कर रख देता है। एक अपने पाकेट में रख लिया। इन पत्रों के लिखने में ११॥ रात के बज जाते हैं। कुर्सी पर से उठ कर अपनी चारपाई पर आता है। आध घण्टा इस सोच विचार

में पड़ कर करवटें बदलता है. क्या करूँ, घर से बाहर जाऊँ या नहीं। अकेले उर्मिला को कैसे छोड़ूँ। लोग क्या कहेंगे! बड़ा कमजोर दिल का था। जरा सी उधेड़ बुन में अपने घर द्वार, माता, स्त्री सभी को छोड़ कर चला गया। लेकिन कभी यह सोचता कि मैंने जो निश्चय किया है वही ठीक है। यह संसार माया का है। जब तक रहना है, इसी में फसना है। इतने में घण्टी की आवाज ने टन टन कर के १२ सुनाया। पास की घड़ी में जब नजर डाली तो वास्तव में १२ का समय था। बिस्तरे से उठा उर्मिला के पास धीरे से गया और वह बेखबर सोई पड़ी है। उसके चेहरा से साड़ी हटी हुई है। बाल बिखरे पड़े हैं। दरवाजा को चोरों की भांति धीरे से खोलता है, थोड़ी देर दरवाजा पर खड़ा रहता है। दरवाजा से एक बार उर्मिला की तरफ फिर देखता है और धीरे से फाटक बन्द करके अपना रास्ता लेता है, क्योंकि देखता है कि घड़ी में १२¼ का समय है। उस समय हरिद्वार की तरफ जाने वाली ट्रेन में पौन घण्टे की देर थी। रमेश अपने साथ २५) लेकर चला क्योंकि उसके पास उतने ही रुपये बचे थे। अन्तिम समय में अपने घर को नमस्कार करता है और स्टेशन की राह लेता है। जल्दी जल्दी करके अमीनाबाद पार्क आता है। चौक से चारबाग के लिए इक्का करता है। खत को स्टेशन के लेटरबक्स में छोड़ता है और हरिद्वार जाने के लिए टिकट खरीदता है साथ में एक लोटा, एक कम्बल और एक चद्दर लिया है। इसके अतिरिक्त एक कुरता और दो धोतियाँ भी हैं। इसके सिवा और कोई सामान उस के साथ नहीं है। ट्रेन का डब्बा खोलता है और उसमें घुसता है। एक तरफ सीट खाली पाता है। अपने कम्बल और चद्दर को बिछा कर लम्बी तान देता है. किन्तु उसे नींद नहीं आती है। ट्रेन ५ मिनट में सीटी देती है और सन सन

करती हुई चली जा रही है।

उर्मिला की आंख जब ४ बजे खुलती है, देखती क्या है कि चारपाई खाली पड़ी है, सोचती है कि शायद रमेश पाखाना गये हों। आध घण्टा इन्तजारी करती है, जब रमेश वापस नहीं आते हैं तो सोचती है कि शायद वह घूमने चले गये हों। स्वयं नित्य क्रिया से छुटकारा पाती है, मुँह हाथ धोती है, स्नान करने को जाती है। स्नान करके वापस आती है, तब तक उसे यही ख्याल था कि रमेश टहल कर अभी आते हैं, किन्तु जब वह मेज पर बालों में कंघी करने को जाती है तब उसे दो पत्र रमेश के लिखे हुए मिलते हैं। उसे उठा कर वह पढ़ना चाहती है कि देखूँ रमेश ने रात में क्या लिखा है। ज्यों ही उसकी नजर खत के ऊपरी सतर पर पड़ी। क्या लिखा पातीः-"प्रिय उर्मिला, प्रसन्न रहो। यह मेरा अन्तिम सन्देश है। वह यह पढ़ कर घबड़ा गई। उसके पैरों तले से जमीन निकल गई। धम से गिर पड़ी। नौकर दौड़ा हुआ आया। बहू बहू कर के पुकारने लगा। जब वह जरा भी नहीं बोली तब वह दौड़ा हुआ उमेश के पास गया। हाँफता हुआ कहने लगा कि बहू जी को क्या हो गया है? वह बेहोश गिर पड़ी हैं। जरा भी बोलती नहीं हैं। उमेश ने पूछा, रमेश बाबू कहां हैं? उसने कहा कि मालूम नहीं वह कहां गये हैं? शान्ति और उमेश दौड़ कर आते हैं। उर्मिला को बेहोश पाते हैं। जल का छींटा देकर उसे होश में लाते हैं किन्तु उर्मिला यह कहकर "यह मेरा अन्तिम शब्द समझो फिर बेहोश हो जाती है। उमेश व शान्ति की समझ में यह नहीं आता कि क्या बात है। बहुत सोचने पर उमेश कहता है कि कोई रहस्य की बात है। उसकी नजर उर्मिला के पास आने वाले पत्र पर पड़ती है, उमेश ने पत्र उठा लिया और एक सिरे से दूसरे

सिरे तक पढ़ गया। पढ़ने से सारी बातें मालूम हुई। उमेश चुप हो जाता है। फिर अपना पत्र मेज पर से उठा कर पढ़ता है। पहले उसको अपने पर इतमिनान नहीं होता है, बार बार रमेश का पत्र पढ़ता है रमेश के हाथ का लिखा हुआ पत्र साबित होता है। दांतों तले उँगली रखता है शान्ति से सब किस्सा कह सुनाता है। शान्ति और उमेश दोनों उर्मिला को हर तरह से समझाते बुझाते हैं, घबड़ाओ नहीं मैं अभी पुलिस में रिपोर्ट किये देता हूँ। वह कहीं भी रहेंगे, पकड़ कर ला दिए जायेंगे। उमेश कोतवाली में इसकी रिपोर्ट करता है। अखबारों में इसकी सुचना दी गई कि "यदि कोई शख्स ऐसी शनाख्त का मिले तो उसे मुझ तक पहुचाने का कष्ट करें।" उसको ५००) पुरस्कार दिया जाएगा।" उमेश, रमेश की दरख्वास्त आफिस सुपरिनटेन्डेन्ट को देता है और सब किस्सा कह सुनाता है। दफ्तर के सब बाबू लोग अफसोस करते हैं कि रमेश ने बड़ी भूल की। उमेश ने बड़ी कोशिश और पैरवी से उसका वेतन और बचे हुए प्राविडेण्ट फन्ड के ३००) निकलवा कर उर्मिला को दिलवाया। तीसरे दिन रमेश की माता सुबह की ट्रेन से एक आदमी के साथ उमेश के मकान पर आती हैं। आने के साथ ही रोना धोना मच जाता है। सारा घर रोने धोने से कुहराम मच जाता है। उमेश और शान्ति के बहुत समझाने बुझाने से कहीं जाकर रमेश की माता और उर्मिला चुप होती हैं। दूसरे दिन सुबह की ट्रेन से रमेश की माता और उर्मिला घर को रवाना हो गई।

रमेश तीन दिन के सफर के बाद हरिद्वार पहुचता है। वहां वह एक धर्मशाला में जाकर ठहरता है। एक दो रोज आराम करने और यात्रा की थकावट मिटाने के बाद हरि की पीढ़ी देखने जाता है।

अकेले थे। संध्या का समय हो गया था, राह दिखाई नही देता था और जब लौटने लगे तो पहाड़ी नाला भर गया था। पार करके आना कठिन हो गया। थके मांदे, भूखे प्यासे उसी नाले के तट पर एक वृक्ष के नीचे अपनी फटी कमरी बिछा कर पड़ गये। चांदनी रात थी, सन सन पवन बह रहा था और पानी के शोर से नींद नही आती थी। तरह तरह भावनायें उठती थी और बैठ जाती थी। अकस्मात इस चांदनी रात में उर्मिला के संग गोमती नदी की सैर याद आ गई। अब इस समय एक दूसरी कविता याद आ गई और इसे गुनगुनाने लगे :–

चाँद हँसता रहा, रात सोती रही,
चाँदनी अपने प्रीतम से मिलती रही।
एक-समय चांदनी आह भरी राह में,
आज, खुशहालियां है, मना वो रही।
जिसके, उत्साह के राह में चांद ने,
अपने दौलत की थैली लुटादी रही।
इसने तारों की खेती उगादी रही,
जा-बजा झाड़ फानूस सजा दो रही।
चाँद···· ···· मिलती रही।
पूरे उल्लास में, चाँदनी जग रही,
दीप जलते रहे, रात सोती रही।
चाँदनी झर झर पेड़ों से गिरती रही,
मानों आंचल से मोती लुटाती रही।
"पी" पपीहों ने थी छेड़ दी रागिनी,
पत्नी पति के बिरह में थी जग रही।
कोयल आमों के डाली से थी झूल रही।
मधुर सुन्दर बानी में थी गा रही।
पूरे उल्लास में··· ····सोती रही।

सरिता अपनी जवानी में भूली रही,
दिन घटता रहा, रात बढ़ती रही।
रात दुःख में पहाड़ सी लगती रही,
चांद हसता रहा, रात सोती रही।

राही कमरी को अपने समेटे रहा,
तारे गिनता रहा, चाँद हसता रहा।
राही अपने नगर से, उस पार था,
दीप जलता रहा, देखता वो रहा।
(सरिता .... रात बढ़ती रही।)

भोर में नींद प्यारी का आना हुआ,
हाय ! राही को रास्ते में, नींद आ गई।
अचानक राही की आंख जो खुल गई,
तो देखा, प्रभा की किरण छा गई।

झट कमरी समेट और झोली उठा,
बैठ कश्ती में. तब, वो किनारे लगी।
'राही' दुःख की घड़िया गिना पार में,
पार होते, किरण यह स्वर्ण हो गई।
(भोर में .... नींद आ गई।)

गुनगुनाते गुनगुनाते वह सो गया। देखा ७ बज गया, धूप निकल आई है और लोग आ जारहे हैं। वह भी उन लोगों के साथ हरिद्वार नगर में प्रवेश किया।

चूँकि यह समय मेला वगैरह का नही था इस लिए बहुत ही कम यात्री वहां दिखाई देते थे फिर भी हरिद्वार हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों में से ठहरा, इस के अतिरिक्त एक पहाड़ी रमणीक जगह ठहरी। लोग प्रायः घूमने जाया करते हैं।

इसके अतिरिक्त साधु महात्मा और सन्यासियों की जमघट वहां सदैव लगी रहती है। बहुतेरे साधु महात्मा और सन्यासियों ने वहां अपना निश्चित निवासस्थान नियत कर रखा है। रमेश बाबू का परिचय धीरे धीरे उन लोगों से होता गया उन लोगों के साथ नित्य प्रति का रहना सहना और सतसंग होने लगा बड़े मौज का जीवन व्यतीत होने लगा। किन्तु कुछ काल के रहन सहन जीवन के प्रयोग ने यह सिद्ध कर दिया कि यह साधु महात्मा जो दिखाई दे रहे हैं उनकी अधिक संख्या उन लोगों में से ठहरी जो यद्यपि संसार के बखेड़ों से अलग रहने के बाद भी यहां रुपये पैसे के बन्धन में अभी तक जकड़े हुए हैं। इसके लिए अनेकों प्रकार के अनुचित प्रयोग काम में लाते हैं। कुछ तो ऐसे भी थे जो बहुत ही गन्दा जीवन व्यतीत कर रहे थे, जिन के चरित्र का वर्णन करने में यहां लज्जा आती है। मुफ्त का माल खा खा कर मुचण्डे काशी के सांड़ की भांति घूमते और इधर उधर पड़े दिखाई देते थे। यात्रियों के ठगने और लूटने का स्वांग जितना बना सकते थे, बना रक्खे थे। कुछ ने तो भगवत् भजन और तपस्याओं में अपने को इतना कमजोर और दुर्बल बना दिया था कि स्वयं चलने फिरने से लाचार हो गये थे। यहां तक कि अच्छी तरह से ईश्वर भजन भाव भी नहीं कर सकते थे। रमेश जिसे देखता है वह अपने विचार में मस्त हैं, किन्तु अपना हम विचार किसी को पाता नहीं है। इन लोगों के जीवन से दुखी होता है और अपने जीवन को एक परोपकार में लगा देने का दृढ़ निश्चय करता है। सोचता है कि मुझ जैसे छोटा मनुष्य से लोगों की कौन सी सेवा हो सकती है। इस विचार के बाद, वह नये किस्म की साखा कायम करना चाहता है। जिस में इस प्रकार की शिक्षा

दी जाय जिसकी नीव चरित्र और आत्मा पर निर्भर हो। जैसे मौत क्या है ? इससे लोग क्यों डरते हैं ? आत्मा और परमात्मा में क्या सम्बन्ध है ? मनुष्य का क्या कर्तव्य है ? इस प्रकार के प्रश्नों पर बहस और व्याख्यान हुआ करें। इस विचार को निश्चय करके रमेश एक फूस की झोंपड़ी डालता है जो आबादी से बिल्कुल अलग है और एक सुनसान स्थान पर बनी हुई है। फर्श पर एक मोटा टाट पड़ा हुआ है। और उस पर एक मोटा सा कम्बल बिछा हुआ है। अब उसके समान-विचार वाले लोग धीरे धीरे वहां आने लगे और वह उनको उपदेश देना आरम्भ किया। इसके पश्चात वह अखबारों में छपवाता है कि "जो महाशय इन विचारों के हैं। वह अपने बच्चों को जिसकी आयु ५ वर्ष से अधिक न हो, यहां भेज सकते हैं। उनको इन बातों पर शिक्षा व दीक्षा दी जायेगी।" रमेश की रहन सहन और पहनाव अब बिल्कुल बदल गया है। उसके पास केवल दो गेरुवे मोटे ऊन के कुरते और दो धोतियाँ हैं। भोजन के बर्तनों में एक थाली और एक लोटा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। रमेश का नाम भी बदल गया है। अब वह स्वामी धर्म वीर के नाम से प्रसिद्ध होता है। बड़े लोग जो हरिद्वार में आते वह जरुर उनसे मिलने जाते है। उनका सादा जीवन और कुशल वाणी" सुन कर बहुत प्रसन्न होते हैं। कुछ धनवान लोग इस संस्था को देते, किन्तु स्वामी धर्मवीर उसमें से एक छदाम भी अपने लिये व्यय नहीं करते थे, बल्कि सब रुपया उन बच्चों को जो वहां विद्या पढ़ने को आते थे अथवा जो महाशय वहाँ आते है उनके भोजन-छाजन, रहने-सहने में व्यय करते हैं। बहुत शीघ्र उन पूँजी पतियों और दानी लोगों की दया से वहां एक बहुत बड़ा स्कूल और एक सत्संग बैठक के लिये बन गया। काफी संख्या बच्चों की होगई। धीरे-धीरे १०० तक संख्या

पहुंच गई। यहां तक हो गया कि बहुत से बच्चें वहां जगह न पाने के कारण वहां से वापस जाने लगे। स्वामी जी उन बच्चों को भी अपने जैसे ढांचे में रखते थे। गीता का अध्ययन नित्य प्रति कराया जाता था।

उर्मिला मकान पर आती है। अड़ोसी पड़ोसी उसे देखने आती हैं। उर्मिला और उसकी सास के हृदयग्राही रोदन को सुनकर रो पड़ती हैं। कई सप्ताह तक यह सिलसिला जारी रहा। इसके बाद रिश्तेदारों की बारी आई। वे भी एक एक करके महीनों तक आते रहे। सब उनके दुखड़े को सुनते और रो पड़ते थे। सब समझाते बुझाते कि अब चारा ही क्या है? ईश्वर मालिक ठहरे, हाँ रमेश ने बहुत बड़ी भूल की जो उसने ऐसा काम किया। घर में एक बुड्ढी माँ और जवान बीबी को छोड़ कर कहां चला गया। खैर घबड़ाने की बात नहीं है। अभी रमेश के भाई लोग मौजूद ही हैं, तुम लोगों की देख भाल होती रहेगी, किन्तु किसी को यह नहीं मालूम था कि वह क्यों आजिज आकर घर छोड़ा। बीबी के जीवन ढङ्ग ने रमेश को इस बात पर मजबूर कर दिया था कि वह घर बार छोड़ दे। उसका जीवन उस पर खुद दूभर हो गया था। इस जीवन से छुटकारा पाने के लिये उसने ऐसा किया था। और यदि करता नहीं तो चारा ही क्या था? उर्मिला कुछ दिनों तक इसी प्रकार जीवन व्यतीत करती रही। बाद में उसके मैके वाले यह खबर सुनकर आये; हर तरह तसल्ली दी, समझाया बुझाया उर्मिला को अपने यहां ले जाने को कहा ताकि वहां जाकर और दो चार मास रहकर इस रंज को भूल जाय। रमेश की मां राजी हो गई, किन्तु उर्मिला किसी प्रकार राजी नहीं हुई। उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मेरा मुह काला हो गया है, मैं अब कौन

सा मुह लेकर जाऊँ। अब इस घर में मेरा मरना जीना होगा। अब मुझे अपने जीवित रहने की इच्छा नहीं है। मैं भी अपने इस जीवन से छुटकारा पाना चाहती हूँ। क्षमा करना, मैं यहां से कहीं भी न जाऊँगी। इस बात पर उसके मैके वालों को कुछ बुरा लगा किन्तु चारा ही क्या था ? यही था कि बाद में उसके यहां न आवें, जिसके लिए वह पहले ही से अपना नाता छोड़ चुकी थी। चुप चाप वह लोग चले गये। उर्मिला रोते रोते बिल्कुल दुबली पतली हो गई थी। बाद में वह पागल हो गई। कभी रोती, कभी हँसती, दिखलाई देती। सास की तरह नित्य मन्दिर में जाती, घण्टों तक श्री कृष्ण जी की मूर्ति के सामने घुटने के बल सिर झुकाये हुए खड़ी रहती। समझ में नहीं आता था कि वह कौन सी बात धीरे २ कहती थी। बराबर आँसुओं की धारा उसके नैनों से जारी रहा करती थी। उठकर कई बार कृष्ण जी की मूर्ति को नमस्कार करती, फिर खड़ी होकर मूर्ति के सामने नाचने और भजन गाने लगती है। गाते २ कभी धम्म से मूर्ति के सामने गिरती और बेहोश हो जाती थी। रमेश की माँ गोबासा घंटा पास में बैठे रहा करती थी। जब उसे गिरते हुए देखती, तब संभालने की कोशिश करती किन्तु कभी संभलने के साथ साथ स्वयं गिर पड़ती थी। सँभल कर फिर उठती, पानी लाती, उर्मिला के मुह और चेहरे पर छींटा देती तब जाकर वह होश में आती। उठा बैठा कर वह घर लाई जाती। रमेश की माँ हर तरह अपने तईं कोशिश की कि उर्मिला मन्दिर न जाय किन्तु वह कब मानने वाली थी। जरा सी मां को इधर उधर जाते देखती, घर से निकल कर मन्दिर की राह लेती। जब मां घर आती, घर को सूना पाती, दौड़कर मन्दिर में जाती, वहां उसे उसी राग में पाती। पकड़ धकड़ कर उसे मकान लाती। उसके पागलपन को दूर करने के लिए मां बहुत सा यंत्र मंत्र ला ला कर उर्मिला को पहिनाया करती। तरह तरह की दवायें

जिन लोगों ने बताई, किया करती किन्तु कुछ लाभ न हुआ बल्कि उसका पागलपन बढ़ता गया, यहां तक कि वह तीन तीन, चार चार दिन तक बिना खाये रहा करती। मौज में आती तो मन्दिर में अगर प्रसाद चढ़ता, उसी को पाती, रह जाती। जब देखिये कृष्ण के चरणों में पड़ी दिखाई देती। उन्हीं से हँसती बोलती और भजन सुनाती थी।

(श्याम ! दर्शन तेरे राधा आई है यां)

था हृदय श्याम की ओर, और नजरें थीं नीची,
हाथ जोड़ के कहने लगी राधा यां।
श्याम ! दर्शन तेरे मैं आई हूँ यां,
थाली मिष्ठान पुष्पों की लाई हूँ यां !
भेट तुमको चढ़ाने को लाई हूं यां,
दिल में कितने भावों को लाई हूँ यां !
सेवा मेरा धर्म है, जो करती हूँ यां,
तुझे भगवन् समझ, पूजती हूँ यां !
तेरे बंसी को सुनने को आई हूं यां
तेरे भाव समझने को आई हूँ यां।
मेरी सखियां हैं रोतीं, तेरे बिना,
मेरा जीना न जीना है, तेरे बिना।
तुझे रूठा समझ आई, मनाने को यां,
तुझे हस्तों, खिलाने आई हूँ यां,
श्याम ! दर्शन तेरे मैं आई यां,
अपने प्रीतम मनाने को आई हूँ यां।

नित्य प्रति लोगों का जमघट उस मन्दिर में दिखाई देता। वह किसी की तरफ नहीं देखती और न किसी से बातें करती। उसके

५ पागलपन का सम्पूर्ण मूल मार्ग श्री कृष्ण की मूर्ति थी। उसे चूमती चाटती और हर तरह से प्यार करती थी। धीरे धीरे वह इर्द गिर्द में पगली प्रसिद्ध हो गई। रास्ता में भजन गाती जाती, मौज में आती, कहकहा मारकर हंसने लगती। यह कहते हुए कि तुम कहां अबतक गायब थे, आखिर में ढूंढ़ ली। अब मैं तुझे कहीं भी जाने न दूँगी। तुम मुझे अकेले छोड़ उस अन्धेरी रात में कहां चले गये क्या तुम्हें मेरी जरा भी मुहब्बत नहीं मालूम हुई? आज तुझे मेरी मुहब्बत नहीं मालूम हुई किन्तु मैं तो तेरी मुहब्बत में दावानी हो गई हूँ। अब मैं श्री कृष्ण जी को मन्दिर में अपनी साड़ीके अन्चल से बाध कर रक्खूंगी। कृष्ण जी महाराज हम दोनों के लिए भोजन लायेंगे और हम दोनों साथ खायेंगे। इतने में शरीर बच्चों की गोल, यह कहते हुए दिखाई देती "देखो पगली जा रही है और हँस रही है, जरा उसे तंग किया जावे. मजा आयेगा"। एक उसमें से आगे बढ़ कर उसकी फटी साड़ी खींच देता, कभी दूसरा उसके मुँह में धूल छोड़ देता। वह चिल्ला कर रह जाती। जब किसी वृद्ध को बोलते हुए आते देखते, कि तुम लोग शैतानी क्या करते हो, तब उसे छोड़ घर का रास्ता लेते थे। कोई गलियों से भागा, तो कोई सड़क ही से भागा। इस तरह वह प्रायः इन दुष्ट बच्चों द्वारा सताई जाती थी किन्तु कर ही क्या सकती थी।

माघ का महीना था, बहुत कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था, मकरसंक्रान्ति भी बहुत निकट आगई थी। उस वर्ष सूर्यग्रहण और संक्रान्ति तिथि एकही दिन पड़ी थी, जिसका नतीजा यह था कि प्रयाग और काशी में बहुत कड़ी भीड़ स्नान करने के हेतु होने वाली थी। बहुत दिन बाद यह दोनों स्नान एक साथ करने का अवसर मिला था। १५ दिन पहले से ही रमेश बाबू के गांव में इसका चर्चा होने लगा। घर बाहर जहाँ कहीं मौका लगता, लोग

इसके विषय की बातें करते। यहां तक कि जब कुछ लोग मन्दिर में जाकर पुजारी और साधु लोगों से बातें करते थे, कहते कि इस वर्ष दोनों स्नान एक साथ होने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है। हम लोगों को काशी या प्रयाग स्नान करने चलना चाहिये। दुख सुख तो इस संसार में लगा ही रहता है। कुछ परलोक का भी ख्याल करना चाहिये। पुजारी जी हां में हां मिलाते थे। सब की राय से संक्रान्ति के एक दिन पूर्व ही जाने का निश्चय हुआ। पगली भी मन्दिर के एक कोने में बैठी यह सब बातें सुना करती थी। जिस दिन स्नान को जाना था, सब बूढ़े नर-नारी अपना अपना सामान लेकर उस मन्दिर में जमा हुए। उनके साथ कुछ अधेड़ दो चार स्त्रियाँ जो एक मुद्दत से बेवा होगई थीं मौजूद थीं। जिनके लिये इस संसार में साधु जीवन और धार्मिक जीवन व्यतीत करना ही रह गया था। सब नर नारी मन्दिर से स्टेशन की ओर अपना अपना सामान लिये हुए निर्गुण गान करते हुए चले। स्टेशन पर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि उनके पीछे कुछ दूरी पर पगली भी चली आ रही है। जिधर वे जाते हैं, उधर ही वह भी जाती है। उसमें से कुछ लोगों ने उसे देखा और कहा कि यह बला कहां से आगई? हम लोगों को रास्ते भर तंग करेगी। आओ उसे मार भगावें। उनमें कुछ बुड्ढे और विचार शील नर-नारी भी थे। उन्होंने कहा, भाई! वह आप लोगों का क्या बिगाड़ रही है। भीड़ में कौन टिकट पूछता है? दूसरे वह पागल ठहरी, रेल के कर्मचारी उससे क्या टिकट मांगेगें। इतना ही होगा कि रास्ते में हम लोग जो खायेंगे, इसे भी खिला देंगे। जिधर हम लोग जायेंगें उधर वह भी चली जायेगी। इस तरह हम लोगों के साथ चल कर वह भी स्नान कर लेगी। हम लोगों को बड़ा यश मिलेगा। अब वे लोग टिकट कटा कर ट्रेन में बैठे। पगली भी उनके साथ नीचे के हिस्से में बैठी। गाड़ी सीटी देकर रवाना हुई। गाड़ी में

५ इस कदर भीड़ थी कि लोग एक दूसरे पर लदे हुए थे। भीड़ के कारण लोगों की कुछ न कुछ संख्या हर पिछले स्टेशन पर छूट जाती थी। कौन इस भीड़ में टिकट जांचने आता है। रात भर ट्रेन में यह आनन्द रहा कि जहां देखिये किसी न किसी डिब्बा से स्त्रियों के निर्गुण गान सुनाई देते थे। इस प्रकार गाड़ी एक-दो जगह बदलने के बाद बनारस सिटी पहुंची। अधिकांश यात्री काशी के थे। और जिनको प्रयाग जाना था वह इसी गाड़ी में बैठे रह गए। काशी के यात्री गाड़ी से उतर, टिकट दे दे कर बाहर निकले। इतने में एक भीड़ यात्रियों की इस कदर हुई कि टिकट का फाटक टिकट बाबू के रोकने से भी नहीं रुका और भर्र से एक झुण्ड यात्रियों का फाटक से बाहर निकल गया, उसी भीड़ में पगली भी थी। वह भी बिना टिकट के बे रोक टोक बाहर निकल गई। बाहर जाकर उसके गांव वाले एक जगह सब इकट्ठा हुए। तब एक झुंड बना कर अहिल्या घाट की तरफ प्रस्थान किये। पगली भी साथ साथ हो चली। घाट पर पहुंच कर स्नान किया और यथा शक्ति दान पुण्य भी किया। पगली के पास क्या था जो वह दान पुण्य करती। केवल स्नान किया और एक टक दानी लोगों के दान करते हुए पदार्थों को देखती रही। यह लोग कई मन्दिरों के दर्शन के बाद भगवान विश्वनाथ जी के मन्दिर पर पहुंचे। भीड़ इस कदर मन्दिर और उसकी गलियों में थी कि लोगों का एक साथ का आना जाना कठिन था। मन्दिर में एक साथ घुसने की कोशिश की, इतने ही में इस कदर भीड़ हुई कि पगली का साथ छूट गया। मन्दिर से पगली के गांव वाले निकले। पगली की बहुत तलाश की किन्तु उसका पता न चला। फिर वे लोग स्नानघाट गए कि शायद पगली वहां उनकी तलाश में चली गई हो किन्तु वहां भी उसका पता न चला। अन्त में लाचार होकर वे लोग जो स्नान करने गए थे, अपने घर वापस आए।

बड़ी शीघ्रता से इर्द-गिर्द के गांवों में यह बात फैल गई कि पगली काशी स्नान को गई थी, वहीं भीड़ में गायब होगई। पता नहीं कि वह भीड़ में दब कर मर गई या जिन्दी है। रमेश की माँ को जब यह बुरी खबर मिली, सुनते के साथ ही वह बेहोश होकर धड़ाम से गिर पड़ी। कई जगह चोट लग गई। पानी छिड़कने और हवा करने के बाद उसे जाकर कहीं होश हुआ। महीनों तक वह रोती गाती रही! रमेश के जीवन के यादगार की एक टिमटिमाती हुई जो बत्ती थी वह भी अब बुझ गई। उसका सारा जीवन दुखमय और अन्धकारमय हो गया किन्तु चारा ही क्या था।

इधर पगली उस भीड़ में अपने गांव के लोगों को तलाश करते करते थक गई। कभी विश्वनाथ जी के मन्दिर पर जाती थी तो कभी घाट स्नान पर आती और कभी स्टेशन पर जाकर प्रत्येक यात्री को ध्यान से चुपचाप देखती किन्तु कुछ बोलती न थी। चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। परेशान दिखलाई देती थी। स्नान समाप्त होने पर वह हफ्तों तक उसी धुन में पड़ी रही। मन्दिर में जाती, जो प्रसाद मिल जाता उसे खाती, न किसी से मांगती और न कुछ कहती। मन्दिर के पुजारी और महन्थ लोग परेशान थे कि यह कैसी स्त्री है। न किसी से कुछ मांगती है और न किसी से कुछ कहती है। जो मन्दिर में मिलता है उसे खाती है। और विष्णु भगवान की चौखट पर रात में सो जाती है। लोगों ने बहुतेरा उसका नाम, पता, परिचय पूछा किन्तु वह कुछ न बताती बहुत पूछने पर इतनी सी बात बताई कि मैं एक दुःख की मारी नारी हूं। मेरे लिये संसार सूना है। अब मैं पगली कहलाती हूं। स्नान करने के लिए मैं यहां आई थी। साथियों का साथ छूट जाने के कारण मैं यहीं रह गई।

या वह लोग जान बूझ कर मुझे छोड़ कर चले गये। अब मैंने यह निश्चय कर लिया है कि प्रभु विश्वनाथ जी के चरणों में अपना शेष जीवन बिताऊँ। देखूँ प्रभु मुझ पर कब दया दृष्टि करते हैं। लोगों ने बहुतेरा समझाया बुझाया, रुपया लो टिकट कटा दिया जाय या कहो तो किसी को तुम्हारे साथ मकान तक पहुँचाने को भेज दिया जाय किन्तु वह किसी की न सुनी। यह कहते हुए कि अब मेरा घर कहां है। मैं तो यहीं की हूं। मैं अपने प्रभु की सेवा में रहूँगी। तीन चार वर्ष तक इसी प्रकार वह काशी के मन्दिरों में जीवन बिताती रही। भोर उठती, मन्दिर में झाड़ू देती, अपना गेरुआ वस्त्र उठाती, गंगा स्नान चली जाती। स्नान करके मन्दिर पर आती, पूजा, आरती करती, भोग लगाती तब जाकर प्रसाद को अपनाती। दिन रात माला जपती भजन भाव सुनती और सुनाती।

तीन चार साल कई मन्दिरों में जीवन व्यतीत करने से वहां का सारा भेद पगली को मालूम हो गया था। कहने को वे लोग प्रभु के पक्के पुजारी और भक्त कहलाते थे किन्तु वास्तव में देखो तो गन्दा जीवन व्यतीत करते थे। देखने में बड़े सीधे थे, शांति चित्त, मोटे, वह भी कोल्हू के बैल की भांति मोटे दिखाई देते थे। सायं प्रातः हलुवा, पूड़ी, दूध मलाई उड़ाते थे। भांग छनने की तैयारी २ बजे दिन ही से आरम्भ हो जाती थी। लोटे पर लोटे उड़ा जाते थे। उनमें से कुछ चिलम पर दम भी लगाते थे। मन्दिर में दिन रात मोटे शिकार फँसाने की बातें हुआ करती थी। लोगों को दिखाने के लिये शरीर में चन्दन का टीका लगा लिया करते थे। कोई तो अपने को सच्चा भक्त जताने के लिये सारे शरीर में राम राम, शिव शिव, सीताराम सीताराम के नाम भी छाप रखते थे और हर समय रुद्राक्ष की माला फेरा करते थे

जिससे मालूम हो कि वह पूरे भक्त हैं। परनारियां यदि अड़े हाथ लग जाँय तो हाथ भी साफ कर देते थे। जगह जगह मन्दिरों में इसके लिये गुप्त स्थान बने थे जिसमें रात में राग रागिनी भी हुआ करती थी। कुछ पुजारी और महन्थ खुले आम वेश्याओं के यहां जाया करते थे या खुद उन्हें उस तहखाने में बुलाया करते थे। जहां रात में जलसा हुआ करता था, उर्मिला को जब यह रहस्य मालूम हो गया कि देव स्थान में गृहस्थ जीवन से भी अधिक पाप हो रहा है, तो उसको उस जीवन से धीरे धीरे घृणा मालूम होने लगी। वह अपने दिल में सोचने लगी कि वह कौन सा काम करे जिससे मनुष्य जाति की सेवा हो सके और लोगों को इस गन्दे जीवन से छुटकारा मिले। इसी सोच विचार में वह पड़ी हुई थी।

कार्तिक का महीना था, मधुर सर्दी पड़ रही थी, बरामदे और दालान में लोग लिहाफ डाले पड़े थे। एक दिन प्रातः नारी सुधार समिति की प्रभात फेरी हो रही थी। प्रभात फेरी में केवल स्त्रियां ही स्त्रियां दीख पड़ती थीं। बूढ़ी जवान हर प्रकार की स्त्रियां थीं किन्तु उनकी पोशाक गेरुआ रंग की थी। जलूस के सामने दो स्त्रियां एक झण्डा लिये थीं जिस पर मोटे अक्षरों में "नारी सुधार समिति काशी" लिखा हुआ था। उसके बाद उन दो बूढ़ी स्त्रियों में से एक बीन और दूसरी हारमोनियम लिये हुए नारी सुधार के भजन मधुर शब्दों में गा रही थीं। बाद में जलूस की तमाम स्त्रियां भी उसको दोहराती थीं। प्रभात फेरी शहर में चक्कर करता हुआ भगवान विश्वनाथ जी के मन्दिर से गुजरने ही वाला था कि मधुरगान की वेग पगली के कानों तक पहुँची। वह उस वक्त उठकर मन्दिर में झाड़ू दे रही थी। झाड़ू करीब करीब दे चुकी थी। प्रातःकाल की मधुर गान ने उसे मस्त

कर दिया। झट मन्दिर का फाटक खोल बाहर निकल आई। क्या देखती है कि दो स्त्रियां एक झण्डे को लिये हुए जिस पर "नारी सुधार समिति काशी" मोटे सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ है, उसके बाद गेरुआ वस्त्रधारी बूढ़ी स्त्रियां एक बीन बजाती है और दूसरी हारमोनियम बजा रही है, और साथ साथ मधुर भजन गा रही है जिन्हें जलूस की शेष स्त्रियां दोहरा रही हैं। पगली के दिल में खुशी का एक उमंग पैदा हो गया। उससे आखिर रहा नहीं गया और प्रभात फेरी के जलूस में शामिल हो गई। वह भी शेष स्त्रियों के साथ भजन गाती हुइ जलूस के साथ चलती रही। प्रभात फ़ेरी, शहर का चक्कर करते हुए ९ बजे सुबह नारी सुधार समिति के फाटक पर रुका। वहां पर बुड्ढे सेक्रेटरी नारि सुधार समिति के स्वामी राधा जी पहले से मौजूद थे। स्वामी की आयु लगभग ७० वर्ष की थी किन्तु देखने से ऐसे मालूम पड़ते थे कि अभी ५० वर्ष की अवस्था है। बदन के काफी कद्दावर और मजबूत थे, संस्कृत के विद्वान थे और बाल ब्रह्मचारी थे। उनके शिक्षा का जीवन कांगड़ी के गुरुकुल में व्यतीत हुआ था। शिक्षा जीवन के बाद वह वहीं के प्रोफेसर नियुक्त हो गये थे, ६० वर्ष की आयु के पहुँचे थे, गुरुकुल की प्रोफेसरी से त्याग पत्र दे दिया और तब से अपना जीवन मनुष्य सुधार के लिए और मुख्यतः स्त्री सुधार के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूम घूम कर व्याख्यान देकर बिताने लगे। इस प्रकार उन्होंने अपना ५ वर्ष का समय विताया। किन्तु जब उन्होंने देखा कि इससे अधिक लाभ नहीं होता है तो उन्होंने बनारस में आकर ए० नारी सुधार सामति स्थापित की जिसमें हिन्दू विधवा और अनाथ नारियों की सुधार की शिक्षा होती थी। स्वामो जी ने अपना सम्पूर्ण धन इस संस्था के नाम न्योछावर कर दिया था। इसकी प्रधान अध्यापिका मारवाड़ देश की एक बूढ़ी स्त्री योधा बाई थीं। जो

वहाँ के एक अच्छे राजपूत घराने की स्त्री थीं। पति के मृत्यु पर उन्होंने सन्यास धारण कर लिया था। तब वे काशी में अपना जीवन व्यतीत करती थीं। पगली स्वामी जी के सम्मुख जाकर खड़ी होती है, हाथ जोड़कर नमस्कार करती है, स्वामी जी पूछते हैं कि बेटी तुम कौन हो? अपना परिचय बताओ। तुम कैसे यहां आई? पगली स्वामी जी से अपना परिचय बताती है और कहती है कि आज प्रातः (भोरे) जब मैं भगवान विश्वनाथ जी के मन्दिर में झाड़ू दे रही थी, आपके यहां की प्रभात फेरी की भजन मेरे कानों में सुनाई दी, मैं मन्दिर से बाहर आई, तब से इस जलूस के साथ सम्मिलित हुई हूं। मैं इस नारी सुधार संस्था को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हूं। मैं एक मुद्दत से नारी सुधार जीवन व्यतीत करना चाहती थी, मैं काशी के अधिकांश मन्दिरों में रह कर वहां के कर्मचारियों का गन्दा जीवन व्यतीत करते हुए अपनी आंखों से देख चुकी हूं कि मुझे उनके जीवन से बिल्कुल घृणा सी हो गई है। यह भी देख चुकी हूं कि काशी में विधवाओं की एक प्रचुर संख्या प्रति वर्ष भारत के प्रत्येक प्रान्तों से आती है, अधिकांश इन नारियों के पतिव्रत धर्म, इन अधर्मी और पाखण्डी पुजारियों और पण्डों के हाथों से नष्ट होते रहते हैं। जिनके विषय में अब मैं आप से अधिक कहना नहीं चाहती हूं। अब मैंने यह निश्चय कर लिया है कि अपना शेष जीवन, इस संस्था में दाखिल होकर व्यतीत करूँ। स्वामी जी मेरा नाम इस समिति के रजिस्टर में लिख लीजिये। यही मेरी प्रार्थना है। स्वामीजी ने उर्मिला का नाम अध्यापिका के रजिस्टर में लिख लिया। एक कमरा जिसमें एक तख्ता, एक कुर्सी और एक मेज रक्खी हुई है, उर्मिला को रहने के लिये मिला है। उर्मिला अपने असलनाम को बदल कर अपना नाम कमलीला रखती है। अब वह ३५) माहवार पाती है, किन्तु एक पैसा भी अपने वेतन का नहीं लेती

है, केवल संस्था से अपना भोजन वस्त्र लेती है, शेष रुपया उसी संस्था को दान कर देती है।

नारी सुधार समिति धीरे धीरे करके बहुत शीघ्र पांच छः वर्ष के भीतर ही एक बड़ी संस्था हो गई। नगर के बड़े बड़े लोगों के दान के अतिरिक्त भारत के अन्य प्रान्तों से भी काफी रकम दान रूप में इस संस्था के लिए आने लगी। आनन फानन में नगर के बाहर एक बहुत बड़ा भूमि खण्ड मोल लिया गया। उसमें एक शानदार इमारत, आठ नौ सौ स्त्रियों के पढ़ने और उनके रहने सहने के लिये बन गई। एक पक्की चहार दीवारी चारों तरफ से दौड़ाई गई। आने जाने के लिए एक बड़ा लोहे का फाटक भी लग गया जिसके ऊपरी गुम्बज पर मोटे नागरी अक्षरों में "नारी सुधार समिति काशी" लिखा गया। पांच छः वर्ष के अन्दर समिति में पांच छः सौ विधवा और अनाथ नारियों की संख्या हो गई। समिति में नित्य प्रातः काल सब नारियों से हवन कराया जाता था। गायत्री मन्त्र और गीता का उपदेश सुनाया जाता था। रामायण की भी कथायें सुनाई जाती थीं। इनके अतिरिक्त पतिव्रत धर्म की पुस्तकें जैसे सीता, सावित्री, पार्वती, पद्मिनी के भी पाठ सबको पढ़ाये जाते थे और उन पर लेक्चर दिये जाते थे। और उनके अनुसार चलने के उपदेश दिये जाते थे। एक न एक लेक्चर नारी सुधार पर नित्य हुआ करता था। कभी मीरा पर तो कभी अहिल्या पर। यह तो प्रातः तीन घंटे का कार्य ७ बजे से लेकर १० बजे तक नित्य का रहता था। भोजन और कुछ शयन करने के पश्चात् १२ बजे से ४ बजे शाम तक गृहस्थ जीवन और दस्तकारी के काम सिखाये जाते थे। इसके अतिरिक्त उनको पेंटिंग के भी कार्य सिखाये जाते थे जिससे कि वे अपने भोजन

और वस्त्र के लिये स्वयं कुछ कमा सकें। और किसी के आश्रित न रहें। समिति के प्रबन्ध के लिए एक कमेटी कायम की गई, जिस के सदस्य और सेक्रेट्री तथा चेयर मैन चुने गये। नगर के प्रत्येक मुहल्ले में इसकी सहायक समितियां स्थापित कर दी गईं जिस का यह काम होता था कि वह इस बात का पता लगाया करें कि वहां कौन कौन सी विधवायें हैं। जो बाहर से आई हुई हैं उन को समझा बुझा कर समिति में दाखिल करना उनका काम होता था। समिति के सदस्य, सेक्रेट्री और चेयरमैन चाहे वह पब्लिक हो अथवा समिति की हों, स्त्रियां ही चुनी जाती थीं। इसी प्रकार सब कमेटी (नायब कमिटी) के मेम्बरान, सेक्रेट्री और चेयरमैन भी चुने जाते थे। मरदों की संख्या बिल्कुल कम थी, यहां तक कि राधा स्वामी जो सेक्रेट्री के पद पर रहकर कार्य करते थे, और कोई न था, यहां तक कि वह भी उनके जीवन काल तक ही रहा। समिति की तरफ से स्काउट भी नियुक्त थे जो बहुधा नारियां हुआ करती थीं। जिनका एक गिरोह काशी के तीनों स्टेशनों पर, रात हो या दिन बराबर ट्रेन के वक्त मौजूद रहा करता था जिनका काम यह होता था कि जो यात्री ट्रेन से उतरें उनको देखा करें कि उनमें कोई लावारिस विधवा तो नहीं है। यदि मिल जाती तो उन्हें समिति में लाकर दाखिल कर देते। समिति का नाम शीघ्र भारतवर्ष में फैल गया। दूसरे दूसरे प्रान्तों से विधवायें यहां आने लगीं। समिति में स्त्रियों की संख्या ९०० तक पहुँच गई। दूर दूर से बड़े बड़े लोग इस संस्था को देखने आने लगे। जाते वक्त बड़ी बड़ी रकमें दान दिये जाते थे। कुछ साल बाद योधा बाई का देहान्त हो गया। अब कर्म लीला देवी समिति की प्रधान अध्यापिका और प्रधान सुपरिन्टेन्डेन्ट नियुक्त हुईं। तब से सारा समिति का बोझ उनके सिर पर आ पड़ा।

नारी सुधार समिति का पन्द्रहवां वार्षिकोत्सव था। बड़े धूमधाम से इस वर्ष उत्सव मनाने की तैयारी हो रही थी। दो तीन मास पहले से चन्दे वसूल होने आरम्भ हो गये थे। बाहर से भी इस उत्सव के लिए चन्दे आने लगे। एक काफी रकम जमा हो गई। फागुन का महीना था, हल्का गुलाबी जाड़ा पड़ रहा था, कई बड़े बड़े शामियाने, समिति के अहाते में खड़े किये गये। प्रत्येक शामियाने में बड़ी बड़ी दरियों और कालीनों से सजाये गये एक तरफ समिति की इमारत के लगे हुए शामियाने में कई तख्तों को एक दूसरे पर रख कर एक ऊँचा लम्बा चौड़ा स्टेज तैयार किया गया था, जिस पर पचास साठ आदमी आसानी से बैठ सकें। उस पर एक बड़ी मेज और दो तीन कुर्सियां रक्खी हुई थीं। स्टेज पर एक अच्छी खासी दरी बिछी हुई थी जिस पर कई कालीन बिछे हुये थे। और स्थान स्थान पर गमले रक्खे हुये थे। यह उन लोगों के बैठने की जगह थी जो खास तौर पर निमंत्रित किये गये थे। इन में लोकल और बाहर से जो बड़े बड़े महाशह आये थे उनके बैठने के लिए बिछे थे। इस वर्ष समिति के उत्सव के सम्पूर्ण कार्य सभापति स्वामी धर्म वीर की अध्यक्षता में होना निश्चय हुआ था। हरिद्वार से बड़ीखत किताबत होने पर स्वामी धर्म वीर भी राजी हुये थे। अब क्या पूछना था, समिति के कार्यकर्ताओं ने मारे प्रसन्नता में प्रोग्राम, निमत्रण पत्र और साधारण नोटिसें छप वाई। स्थान स्थान पर बड़े बड़े इश्तिहार छपवा कर चस्पा कर दिये गये। निमंत्रण बड़े बड़े लोगों के पास भेजे गये। स्वामी धर्मवीर जी के अतिरिक्त और बड़े बड़े लोग गुरुकुल कांगड़ी तथा अन्य बड़े बड़े स्थानों के निमंत्रित किये गये। काशी नगर में एक प्रकार की हलचल मच गई थी। एक मास पूर्व ही से लोग इस शुभ अवसर की प्रतीक्षा में थे। जिस घर देखिये यही चरचा छिड़ी

रहती थी कि स्वामी धर्मवीर जी इस वर्ष समिति के वार्षिकोत्सव के अवसर पर पधार रहे हैं। हम लोगों के लिए बड़ा अच्छा अवसर हाथ आरहा है कि इस अवसर पर उनके व्याख्यान से लाभान्वित हों। यद्यपि आप की प्रशंसा समाचार पत्रों में सुन चुके हैं, उन के लेख पत्रिकाओं में पढ़ चुके हैं, और उन का फोटो भी देख चुके हैं, किन्तु इस शुभ अवसर पर आप की जबान से सुनने का अवसर प्राप्त होगा। सुनते हैं कि बड़े ही सुयोग्य पुरुष हैं। संस्कृत और हिन्दी भाषा के बहुत ही बड़े विद्वान हैं। साथ साथ अंगरेजी भी काफी जानते हैं। किसी किसी अवसर पर इस भाषा में व्याख्यान भी देते हैं। अभी पिछले वर्ष अमेरिका में अपनी मशीनरी के प्रचार के हेतु गये थे. वहां उनकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई। एक बार वहां एक जलसे में पतिव्रत नारी धर्म पर एक खासी इस्पीच दी, जिसे सुन कर वहां के बड़े बड़े विद्वान दंग रहगये। दांतों उंगली दबाई। वहां की सरकार ने हर प्रकार से यह प्रयत्न किया कि यह हमारे यहां रहकर हमारी यूनिवर्सिटी में इस विषय पर लेक्चर दिया करें जिस के लिए दो हजार रुपये माहवार वेतन देने के लिये वहां की सरकार प्रस्तुत थी किन्तु स्वामी जी उसे ठुकरा कर चले आये। यह कह कर कि मैं सन्यासी हूं, मुझे रुपये पैसे की आवश्यकता नहीं है, मेरा काम मनुष्य जीवन का सुधार करना है, और घूम घूम कर अपना उपदेश सुनाना है। मुझे अपने देश में सबसे अधिक सेवा करनी है जिसके अन्न जल से मेरा शरीर बना और पला हुआ है। आज उसी विषय पर स्वामी जी को इस समिति के उत्सव पर व्याख्यान देना है। वास्तव में बड़े ही धर्म वीर हैं। ईस्म बा मुसम्मा (यथा नाम तथा गुणः) हैं। जैसा नाम है वैसी ही खूबियां भी आप में भरी पड़ी हैं।

समिति के उत्सव की कार्य वाही एक दिन पहले ही पूर्ण होकर

तैयार हो गई। पहले दिन एक बड़ा जलूस नगर कीर्तन करता हुआ तरह तरह के भजन गाता हुआ, नगर की छोटी बड़ी सभी सड़कों से १० बजे प्रातः से ६ बजे शाम तक चक्कर करता रहा। ६॥ बजे शाम को समिति के फाटक पर आकर समाप्त हुआ। इस जलूस में लोगों की इस कदर भीड़ थी कि सड़क के एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ पार करने में १५ मिनट का समय लगता था। जलूस एक मील लम्बा था जिस में नर, नारी और बच्चे सभी सम्मिलित थे। समिति के दूसरे दिन की कार्यवाही ७ बजे से ११ बजे दिन तक, फिर २ बजे दिन ४ बजे दिन तक, फिर रात में ७ बजे से १० बजे तक होने वाली थी, जलसे की कार्यवाही दो दिन तक जारी रही। स्वामी धर्म वीर दूसरे दिन प्रातः ८ बजे वाली ट्रेन से हरिद्वार से आने वाले थे। समिति के स्काउट दो रोज से स्टेशन पर नियुक्त थे जिनका काम यह होता था कि जो लोग बाहर से आते थे उन्हें समिति की लारी पर बैठाकर समिति तक पहुचायें। समिति की कार्यवाही, प्रोग्राम के अनुसार ७ बजे प्रातः से आरम्भ हुई स्काउट और समिति के सेक्रेट्री स्वामी राधा स्वामी जी स्टेशन पर स्वामी धर्मवीर जी को लिवाने के लिए ८ बजे पहुँच गये थे। ट्रेन ८ बजकर ५ मिनट पर आई, सब मुसाफिर उतरे किन्तु स्वामी धर्मवीर जी का पता न लगा। निराश होकर स्काउट और स्वामी राधा स्वामी जी वापस आये। फिर एक एक्सप्रेस जवाबी तार स्वामी धर्मवीर जी के पास हरिद्वार भेजा गया, जिसमें लिखा था कि आप का इस अवसर पर आना आवश्यक है, अन्यथा उत्सव की सम्पूर्ण कार्यवाही फीकी पड़ जायेगी। यहां पर सब लोग आप की प्रतीक्षा में हैं।

स्वामी धर्मवीर जी के न आने पर आचार्य राधा स्वामी जी के सभापतित्व में कार्य ८॥ बजे से आरम्भ हुआ। ७ बजे से

१० बजे वाले प्रोग्राम के अनुसार, स्वामी जी ने कार्य आरम्भ होने के पूर्व संस्कृत में ईश्वर की प्रार्थना और सब लोगों को शान्तिपूर्वक बैठने को कहा। इसके बाद स्त्रियों का भजन और गान हुआ। पण्डाल में एक बड़ा हवन हुआ, जिसका सम्पूर्ण कार्य स्त्रियों ने किया। अब सेक्रेट्री साहब ने समिति के पिछले वर्षों की कार्यवाही पढ़कर सुनाई। समिति कब से और किस संख्या से आरम्भ हुई और किस किस वर्ष में कितनी उन्नति की। अब उसकी क्या दशा है? उसके बाद विधवाओं और अनाथ बालिकाओं की दस्तकारी और पेंटिंग के काम की वस्तुएं दिखाई गईं। सब ने देख कर आश्चर्य किया कि यह वस्तुयें यहां तैयार होती हैं। जिनकी सफाई मशीनों से भी नहीं हो सकती है। इसके बाद समिति की उन महिलाओं को पुरस्कार दिया गया जिनका काम खास तौर पर उस उस वर्ष अच्छा था। उसकी कार्यवाही समाप्त होने पर सभा विसर्जित हुई सब लोग अपने अपने घर गये।

दो बजे से चार बजे शाम का समय व्याख्यान के लिये निश्चित था। सब लोग झुण्ड के झुण्ड एकत्र होने लगे। स्वामी धर्मवीर के न आने पर उनके व्याख्यान का प्रोग्राम शाम के व्याख्यान में रक्खा गया था। दिन की कार्यवाही में शेष लोगों के व्याख्यान शुरू हुये। गुरुकुल कांगड़ी के प्रोफेसर जिनका लेक्चर ब्रह्मचर्य जीवन पर हुआ वास्तव में बड़ा ही रोचक था। लेक्चर दो घंटा तक हुआ ३ बजे शुरू होकर ५ बजे समाप्त हुआ। तालियां चारों ओर से सुनाई देने लगीं। सब लोग अपने अपने घर गये। भोजन करके फिर ६ बजे से भीड़ आनी शुरू हो गई। ७ बजते २ पचास साठ हजार की भीड़ हो गई। बैठने की एक इंच जगह बाकी न रह गई। भीड़ का मुख्य कारण यह था कि लोगों ने सुना था कि स्वामी धर्म वीर जी रात वाली ट्रेन से आते हैं क्योंकि इनके

लिये खास तौर से तार दिया गया था। ट्रेन रात में ८ बजे आने वाली थी। अधिकांश लोगों को यह गर्व था कि तार पहुँचने पर वह अवश्य इस ट्रेन से आयेंगे। लोगों में उनके आने की सूचना कर दी गई थी लेकिन समिति के कर्मचारियों को आशा न थी कि वह आयेंगे। इसलिये केवल स्काउटों को ही स्टेशन पर भेज रक्खा था। इधर समिति की कार्यवाही आरम्भ हो गई थी एक लेक्चर ७ बजे आरम्भ होकर ८ बजे समाप्त हो गया था। आध घंटा प्रतीक्षा करने के बाद ८॥ बजे से दूसरा लेक्चर कमलीला देवी का स्वामी धर्मवीर की जगह पर पतिव्रत नारी धर्म पर आरम्भ हुआ। स्त्रियों की इस कदर भीड़ थी कि इसके पूर्व कभी ऐसी भीड़ न देखी गई थी और न सुनी गई थी। ठीक आठ बजे ट्रेन पहुंची स्वामी जी ट्रेन से उतरे, स्काउटों ने उनका स्वागत किया। स्वामी जी को कार में बिठला कर समिति के सेक्रेट्री के बंगले पर लाये स्वामी जी दो दिन से थके मांदे थे, देहरादून इक्सप्रेस का इंजनलाइन से उतर जाने के कारण रास्ते में ट्रेन रुक गई थी। खैरियत यह हुई थी कि इन्जन लाइन से गिरते गिरते बच गया। वहां तमाम ट्रेन के यात्रियों की जानें बच गई थीं। अगले स्टेशन पर आदमी भेज कर तार और फोन के जरिये दूसरी ट्रेन मंगवाई गई। ऐसा करके ६ घन्टे नष्ट हुए। इस कारण स्वामी जी के आने में देर हुई। इनको क्या पता था कि आप के पास एक्सप्रेस तार भी गया है। स्वामी जी दिन भर के भूखे थे। जल और भोजन लाया गया। भोजन करने और आध घन्टा विश्राम करने के पश्चात जाकर उनकी तबियत ठीक हुई। सब लोग इसी उधेड़ बुन में लग गये थे किसी मनुष्य ने समिति के मैदान में यह नहीं जिक्र किया कि स्वामी जी का पदार्पण हो गया है। सब लोग निराश हो गये थे। उनको क्या पता था कि स्वामी जी आ गये हैं और एक संकट में

पड़ गये थे। स्वामी जी ठीक ९ बजे अपनी मोटी छड़ी हाथ में लिये इक बारगी मैंदान में आ पहुँचे। राधा स्वामी जी झट कुर्सी से उठ खड़े हुये और उनका हाथ पकड़ कर सभापति की कुर्सी पर बिठाया। लोगों से प्रार्थना की कि आप लोग शान्ति रहें और सुनें! स्वामी जी महाराज आज ८ बजे प्रातः की ट्रेन से ही आने वाले थे किन्तु देहरा इक्सप्रेस का इंजन पटरी से उतर जाने के कारण ट्रेन रुक गई थी और वह उस समय न आ सके। दो दिन के थके मांदे, साथ साथ चौबीस घंटे के भूखे प्यासे थे। आये तो रात के ८ बजे वाली ही ट्रेन से किन्तु कुछ भोजन करके और विश्राम करने में एक घंटा समाप्त हो गया। अतः आप लोगों के लिये केवल एक घंटा समय रह गया। इसलिये आप लोग शांति पूर्वक आप का लेक्चर सुनें। आप एक घंटा से अधिक लेक्चर भी नहीं देंगे। क्योंकि आप बहुत थके मांदे हैं। सब लोग शान्ति हो जाते हैं। स्वामी जी खड़े होते हैं खड़े होने के साथ ही साथ खुशी की तालियाँ बजती हैं। इधर कर्मलीला देवी ने स्वामी जी के आने के साथ ही अपना लेक्चर समाप्त कर दिया और एक तरफ रंगमंच पर बैठ गईं। स्वामी जी नारी पति-धर्म पर विस्तार पूर्वक लेक्चर देना आरम्भ करते हैं और भारतीय तथा पश्चिमी देश की नारियों का चित्रण करते हैं, उनकी तुलना करते हैं और कहते हैं कि पतिव्रत धर्म नारी समाज जो हमारे यहां इस बिगड़ी हुई दशा में उपस्थित है उस तक पाश्चात्य देश कई शताब्दी तक नहीं पहुँच सकता। यहां के खुलेआम गुन्डा कर्म जो नित्य प्रति हुआ करते हैं और उसमें उनकी प्रशंसा समझी जाती है, और यहां पर उनको हद दर्जा का नीच कर्म समझा जाता है। साथ साथ इसके हवाला भी दिये जाते हैं। बीच बीच में वाह वाह के नारे होते हैं और तालियां बजती हैं। १० बज जाता है और लेक्चर समाप्त नहीं होता है। सब लोग प्रेम पूर्वक सुनते जाते हैं।

जब से स्वामी धर्मवीर जी आये, तब से श्रीमती कर्म लीला देवी उनकी तरफ बार बार गौर से देखती हैं। कभी अपने दिल में सोचती हैं कि यही हमारे स्वामी रमेश चन्द्र जी तो नहीं हैं। कभी सोचती हैं कि मैं धोखे में हूँ। वह अब कहां मिलेंगे? अब तक मुझ जैसे अधर्मिणी और पापिनी की तरह संसार में जीवित न होंगे। बड़े गौर से स्वामी जी के शरीर के प्रत्येक भागों को देखती है, एक बारगी उस का स्वामी जी के गर्दन के पास के चोट का चिन्ह दिखाई दिया। फौरन रमेश के हलक के फोड़े के आपरेशन का ख्यान आ गया किन्तु जब स्वामी जी ने व्याख्यान देना आरम्भ किया तो उनकी बोली से भी भांप गई कि यह अवश्य हमारे स्वामी रमेश जी हैं। अब उसने अपने दिल में निश्चय किया कि मेरा गुमान गलत हो या सही मैं अब निश्चय करती हूं कि यह अवश्य मेरे स्वामी रमेश जी हैं। लोग मुझे बदनाम क्यों न करें मैं अवश्य उन के पैरों पर गिरूँगी। और पिछले अपने बुरे कर्मों की प्रायश्चित के लिये क्षमा मागूंगी तब जा कर मुझे शान्ति मिलेगी।

स्वामी जी का तो व्याख्यान जहां १० बजे समाप्त होने वाला था, १०½ बजें समाप्त हुआ। समाप्त होने के साथ ही कर्म लीला देवा, धम्म से आकर स्वामी धर्मवोर जी के पैरों पर गिर गई। लोग यह देख कर अवाक हो जाते हैं। कुछ लोगों का गुमान होता है कि शायद स्वामी जी के भाषण से कर्म लीला देवी प्रभावित हो गई हैं और अपने को उनकी शिष्या बनाना चाहती है। किन्तु रहस्य की बात कौन जानता था। स्वामी जी स्वयं इस बात को न जान सकते थे कि किस कारण वह उनके पैरों पर आकर गिरी है। उसके सिर पर हाथ फेर कर कहते हैं कि बहन जी आप को क्या कहना है? सो कहो। कर्मलीला

जरा सिर उठाती है, आंखों में आंसू भरे पड़े हैं, जबान में हिचकियां बँधी हैं। कुछ जबान से कहा नही जाता है। जबान को बहुत संभाल कर कहती है, मेरे स्वामी! मेरे पिछले अपराधों को क्षमा कीजिये शायद आप इस अधर्मिणी और पापिनी को पहिचानते न हों, किन्तु यह पापिनी आप को अवश्य पहचानती है। मैं वह अधर्मिणी, पापिनी उर्मिला हूँ जिसने आप के साथ बड़ा अत्याचार किया था और जो अपने कर्मों का फल भोग रही है और संसार में कर्मलीला कही जाती है इतना कहना था कि स्वामी जी के आंखों से आंसूओं की धारा बह चली। उर्मिला को अपने पैरों पर से उठा कर बिठाया और कहा तुमने हमारे साथ कोई ऐसा अन्याय नहीं किया था जो क्षमा किया जावे। हाँ तुम्हारी बदौलत किसी एक का स्वामी न रहा बल्कि सारे जगत का स्वामी बन गया हूँ और यथा शक्ति सब जीवात्मा की सेवा करना मेरा परमधर्म हो गया है, किन्तु तुम्हारे कथनानुसार सब अपराध क्षमा हैं। मैं अब खुद ही बड़ा पापी और निर्दयी ठहरा कि तेरे जीवन की नौका को मझधार में छोड़ कर चला गया। मैं स्वय मुह दिखाने योग्य नहीं हूँ। खैर प्रभु की जो मरजी होती है वही होता है। मनुष्य का सोचा कुछ नहीं होता। वह जो कुछ करता है अच्छा करता है, वर्ना हम लोग इस जीवन में रह कर अपने को नष्ट कर दिये होते । इस प्रकार हम लोग संसार में रह कर लोगों की सेवा के कार्य में लगे हुये हैं। सब से बड़ी प्रसन्नता की बात मेरे लिये यह है कि हम लोगों का जीवन मार्ग प्रभुने भी आखिर में एक तरह का रक्खा है। यह प्रभु की बड़ी कृपा है। यद्यपि मुझे यह तनिक भी आशा न थी कि तुम इतनी बड़ी पति व्रत नारी निकलोगी, जिसकी जात से हमारे देश की सैकड़ों नारियों का सुधार हो रहा हैं। पण्डाल के पब्लिक की तरफ स्वामी धर्मवीर जी अपने और कर्मलीला की

पिछली जिन्दगी का छोटा सा परिचय बताते हैं और उनके जीवन से सबको शिक्षा लेने की प्रार्थना करते हैं। अन्त में यह कहकर भाषण समाप्त करते हैं कि अब से हम दोनों का यह परम ध्येय रहेगा कि नर और नारी में जो जो बुराइयां उपस्थित हों उनका सुधार करते रहें। बहन कर्मलीला का काम नारी सुधार होगा और मेरा काम नर सुधार और ब्रह्मचर्य पालन होगा। इसके लिए हम लोग देश में घूम घूम कर भाषण देते फिरेंगे। इसी बीच कर्मलीला देवी बोल उठीं, हे भगवन ! मेरी प्रार्थना है कि एक बार फिर से हम दोनों एक साथ एक भजन तो गालें। स्वामी जी प्रार्थना स्वीकार करके भजन आरम्भ किये :—

शिशु काल प्रभात की स्वर्ण किरण है ठहरी,
युवक-काल भानु की तीव्र किरण है भंवरी।
वृद्ध-काल संध्या की लालिमा है ठहरी,
मृत्यु-काल रजनी की कालिमा है गहरी।
बड़े यत्न से संसा चलता, तब होता कल्याण,
ना तो मृत्यु नागिन बनकर, डंस लेती है प्राण॥
(बड़े यत्न से···· ···· ··· डंस लेती है प्राण।)
ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

अंत में तालियां बजती हैं और भाषण समाप्त होता है। बहुत से लोग वाह वाह करते हैं और बहुत से लोगों की आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित होती है। मालूम होता है कि उन पर काफी प्रभाव पड़ा है। जलसा ११ बजे रात को समाप्त होता है। सब लोग अपने अपने घर वापस जाते हैं और यह सन्देश अपने अपने घरों में सुनाते हैं। बहुत दिनों तक हर घरों में इसकी चर्चा होती रही।

॥ समाप्त ॥